बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्ष: 24 ● अंक: 23 ● नई दिल्ली ● वीरवार 30 अक्तूबर 2025 ● प्रभात कालीन ● मूल्य: 3 रूपया ● पृष्ठ: 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागरिक गीता भारती भवन

बी-2/370, सुल्तानपुरी

दिल्ली-86

मध्य दिल्ली में कार की चपेट में आने से एक महिला की मौत, आरोपी गिरफ्तार

नई दिल्ली । मध्य दिल्ली में आईपी एस्टेट के पास एक महिला को अपनी कार से कुचल देने के आरोप में 46 वर्षीय एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। उसने बताया कि महिला को लोक नायक जय प्रकाश (एलएनजेपी) अस्पताल में मृत घोषित कर दिया गया। अभी तक उसकी पहचान नहीं हो पाई है। उसने बताया कि आरोपी खुशीपाल तोमर एक विज्ञापन एजेंसी में काम करता है और घटना के समय वह उत्तर प्रदेश के गौतमबुद्ध नगर में अपने पैतृक स्थान जा रहा था। पुलिस उपायुक्त (मध्य) निधिन वालसन ने कहा, ''25 अक्टूबर को दोपहर करीब ढाई बजे यमुना ब्रिज के पास एक सफेद कार ने इस महिला को टक्कर मार दी और भाग गई।''

राफेल से उड़ान भरकर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सिर्फ इतिहास नहीं रचा है बल्कि महिलाओं और आदिवासी समाज को गौरव से भर दिया है

नई दिल्ली ।

29 अक्टूबर 2025 का दिन भारतीय वायुसेना और पूरे राष्ट्र के लिए एक विशेष दिन के रूप में याद किया जाएगा।

भारत की राष्ट्रपति और सशस्त्र बलों की सर्वोच्च कमांडर श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने हरियाणा के अंबाला वायुसेना स्टेशन से राफेल लड़ाकू विमान में उड़ान भरकर इतिहास रच दिया। यह वही अंबाला एयरबेस है, जहां फ्रांस से आए राफेल विमानों की पहली खेप उतरी थी। लगभग 30 मिनट तक चली इस उड़ान में राष्ट्रपति ने करीब 200 किलोमीटर की दूरी तय की, जो 15,000 फीट की ऊँचाई और लगभग 700 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार पर संपन्न हुई। विमान को 17 स्क्वाड्रन के कमांडिंग ऑफिसर ग्रुप कैप्टन अमित गहाणी ने संचालित किया। राष्ट्रपति ने उड़ान के बाद अपने विचार व्यक्त करते हुए आगंतुक पुस्तिका में लिखा– ÷राफेल विमान में उड़ान भरना मेरे लिए अविस्मरणीय अनुभव है। इससे मुझे राष्ट्र की रक्षा क्षमता पर गर्व की नई अनुभूति हुई है।÷ इस प्रकार, यह केवल एक प्रतीकात्मक उड़ान नहीं थी, बल्कि राष्ट्र के आत्मविश्वास, सामरिक शक्ति और नागरिक गर्व का सशक्त संदेश थी। हम आपको बता दें कि राफेल भारत की सामरिक शक्ति का आधुनिक प्रतीक है। 4.5 पीढ़ी का यह मल्टीरोल लड़ाकू विमान वायुसेना की परिचालन क्षमता को कई गुना बढ़ाता है। राष्ट्रपति का राफेल में उड़ान भरना एक औपचारिक या औपचारिकता-भर कदम नहीं, बल्कि यह संकेत है कि राष्ट्र के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर आसीन व्यक्ति देश की रक्षा तैयारियों पर पूर्ण विश्वास व्यक्त कर रहा है।

भारत की राष्ट्रपति, जो संवैधानिक रूप से सशस्त्र बलों की सर्वोच्च कमांडर हैं, उनका ऐसे लड़ाकू विमानों में उड़ान भरना सैन्य बलों के मनोबल को बढ़ाता है। साथ ही यह एक स्पष्ट संदेश है कि भारत अपने रक्षात्मक ढाँचे को लेकर न केवल सजग है, बल्कि उस पर गर्व भी करता है। राफेल जैसे अत्याधुनिक विमान में राष्ट्रपति की उपस्थिति से अंतरराष्ट्रीय समुदाय को भी यह संदेश जाता है कि

भारत अपनी सीमाओं की सुरक्षा और वायु सामर्थ्य के मामले में किसी भी चुनौती से पीछे हटने वाला नहीं है। इसके अलावा, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का व्यक्तित्व स्वयं में संघर्ष, सादगी और उपलब्धि का प्रतीक है। ओडिशा के एक छोटे आदिवासी परिवार से निकलकर देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद तक पहुँचना अपने आप में प्रेरक कथा है। जब वह सुखोई-30 एमकेआई (2023) के बाद अब राफेल जैसे उच्च तकनीकी लड़ाकू विमान में उड़ान भरती हैं, तो यह दृश्य करोड़ों महिलाओं और आदिवासी युवाओं के लिए आत्मबल और आत्मविश्वास का स्रोत बनता है। विशेष रूप से महिलाओं के लिए यह संदेश अत्यंत सशक्त है कि राष्ट्र की सुरक्षा, तकनीकी शक्ति और निर्णय क्षमता के क्षेत्र में अब लैंगिक भेद की दीवारें टूट चुकी हैं। एक महिला राष्ट्रपति का अत्याधुनिक लड़ाकू विमान में उड़ान भरना इस बात का प्रमाण है कि महिलाएँ अब केवल 'संवेदनशीलता' का प्रतीक नहीं, बल्कि 'साहस' और 'संकल्प' की मिसाल भी हैं। आदिवासी समाज के लिए यह गौरव का क्षण है। दशकों से समाज के हाशिए पर रहे तबकों के लिए यह दृश्य 'राष्ट्रीय मुख्यधारा में समान भागीदारी' की अभिव्यक्ति है। जब देश की सर्वोच्च नेता आदिवासी समुदाय से आती हैं और आधुनिकतम सैन्य तकनीक के बीच आत्मविश्वास से भरी दिखाई देती हैं, तो यह सामाजिक मनोविज्ञान को गहराई से प्रभावित करता है।

इससे यह संदेश जाता है कि अब कोई भी पृष्ठभूमि प्रगति और नेतृत्व की राह में बाधा नहीं बन सकती। इसके अलावा, राष्ट्रपति का यह कदम केवल सैन्य प्रतीक नहीं, बल्कि एक राष्ट्रनैतिक वक्तव्य भी है। यह भारत की आत्मनिर्भरता और तकनीकी प्रगति के मार्ग पर विश्वास का उद्घोष है। नारी शक्ति और ÷जनजातीय गौरव÷ को केंद्र में रखकर यह दृश्य भारत के बदलते समाज की नई कहानी कहता है– जहाँ संवैधानिक गरिमा, तकनीकी श्रेष्ठता और सामाजिक समावेशन का संगम दिखाई देता है। साथ ही, भारतीय वायुसेना के लिए यह अवसर आत्मगौरव का भी है। एक राष्ट्रपति के रूप में द्रौपदी मुर्मू का राफेल में उड़ान भरना वायुसेना के प्रशिक्षण, अनुशासन और तकनीकी दक्षता पर सर्वोच्च विश्वास का प्रमाण है। यह संदेश सैन्य परंपरा की निरंतरता और आधुनिकता के मेल का है– जहाँ संवैधानिक संस्थाएँ और सशस्त्र बल एकजुट होकर राष्ट्र सुरक्षा को प्राथमिकता देते हैं। राष्ट्रपति मुर्मू का यह कदम भारत के उन तमाम युवाओं को भी प्रेरित करेगा जो रक्षा सेवाओं में योगदान देने का सपना देखते हैं। जब देश की प्रथम नागरिक स्वयं युद्धक विमान में उड़ान भरती हैं, तो यह युवाओं के भीतर 'कर्तव्य', 'साहस' और 'सेवा' के आदर्श को पुनः जीवंत करता है। बहरहाल, द्रौपदी मुर्मू का राफेल में उड़ान भरना मात्र एक प्रतीकात्मक घटना नहीं, बल्कि एक युगबोध है। यह उस भारत की कहानी है जो अपनी परंपरा को सम्मान देता है, आधुनिकता को अपनाता है और समावेशन को अपनी शक्ति बनाता है।

1-2 बादल थे वो भी गए... क्यों फेल हुई क्लाउड सीडिंग? आईआईटी कानपुर के साइंटिस्ट ने बताया, बारिश नहीं होने पर विपक्ष ने घेरा

नई दिल्ली । जहरीली गैस का चेंबर बनी दिल्ली को इससे राहत दिलाने के लिए की गई कृत्रिम बारिश यानी क्लाउड सीडिंग की कोशिश पूरी तरह सफल नहीं हो सकी। इस कारण टारगेट किए गए इलाकों में बारिश नहीं हो पाई। दिल्ली में क्लाउड सीडिंग का पूरा काम आईआईटी कानपुर की तरफ से किया जा रहा है। बीते दिन कानपुर से एयरक्राफ्ट ने उड़ान भरी। शाम होते-होते सीडिंग पूरी कर ली गई थी। ऐसा माना जा रहा था कि कुछ ही घंटों में बारिश शुरू हो जाएगी। हालांकि ऐसा नहीं हो पाया। आईआईटी कानपुर के इस प्रयोग में 14 फ्लेयर्स दागे गए। हर फ्लेयर में 20त सिल्वर, आयोडाइड और बाकी रॉक साल्ट और सामान्य नमक का मिक्सचर था। दिल्ली में हाल ही में हुए क्लाउड सीडिंग परीक्षण परीक्षण गंभीर वायु प्रदूषण से निपटने के लिए सरकार और आईआईटी कानपुर के बीच एक सहयोगात्मक प्रयास है। इस परीक्षण में आईआईटी कानपुर के निदेशक प्रोफेसर मनेंद्र अग्रवाल के विचार भी शामिल हैं। प्रोफेसर अग्रवाल ने कहा कि हम शुरू से ही कहते आ रहे हैं कि बारिश के लिए

हमें उचित मात्रा में नमी वाले बादलों की आवश्यकता होती है। कम नमी के स्तर के कारण पर्याप्त वर्षा न होने के बावजूद, इस प्रयोग को एक महत्वपूर्ण आँकड़े जुटाने की प्रक्रिया के रूप में सराहा जा रहा है। यह पहली बार था जब भारत में सर्दियों के दौरान प्रदूषण को विशेष रूप से लक्षित करने के लिए क्लाउड सीडिंग का प्रयास किया गया था। लगभग 50-60 लाख रुपये की लागत वाले इस परीक्षण की प्रभावशीलता पर राजनीतिक सवाल उठे थे, लेकिन वैज्ञानिकों ने पीएम 2.5 और पीएम 10 कणों में 6 से 10 प्रतिशत की कमी दर्ज की, जिससे दिल्ली की जहरीली हवा को साफ करने के भविष्य के प्रयासों के लिए एक मूल्यवान आधार मिला। उन्होंने कहा कि एक बार फिर बारिश कराने के लिए प्रयास किए जाएंगे।

उन्होंने कहा कि बारिश के पूर्वानुमानों के बारे में अलग-अलग रिपोर्ट सामने आई थी। कुछ का कहना था कि बारिश होगी। कुछ का कहना था बारिश नहीं होगी। इसके बाद हमारी टीम ने पाया कि बादलों में नमी की मात्रा बहुत कम है। इस लिहाज से पहले से ही माना जा रहा था कि बारिश नहीं होगी। अग्रवाल आगे बताते हैं कि और दो उड़ानों के जरिए क्लाउड सीडिंग कराई जाएगी। सबसे पहले रसायनों का छिड़काव करने के लिए एक विमान ने कानपुर से दिल्ली के लिए उड़ान भरी थी। विमान ने दिल्ली के बुराड़ी, उत्तरी करोल बाग और मयूर विहार सहित कई इलाकों में रसायनों का छिड़काव किया। आठ इलाकों में यह रसायनों का छिड़काव किया गया था। हर छिड़काव किए गए रसायन का वजन 2.5 किग्र था और परीक्षण आधे घंटे तक चला। राजधानी को प्रदूषण से राहत दिलाने के लिए कृत्रिम बारिश कराने का यह प्रयोग किया गया। सौरभ भारद्वाज ने कहा कि जनता को बेवकूफ बनाने के लिए सरकार ने आर्टिफिशियल रेन की बात की। 27 अक्टूबर को बादल थे और उन्हें को देखकर इन्होंने कृत्रिम बारिश की बात की। वैज्ञानिकों ने कहा है कि क्लाउड सीडिंग होते ही 15 मिनट में बारिश हो जाती है, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इन्होंने उस टाइम को बढ़ा लिया। कहीं भी एक बूंद बारिश नहीं हुई। उन्होंने कहा कि जब आप जानते थे कि दिल्ली में कृत्रिम बारिश नहीं हो सकती तो फिर ये सर्कस क्यों खड़ा किया गया।

उर्दू सबसे 'खूबसूरत' भाषा, प्रगति के लिए हिंदू-मुस्लिम सद्भाव अहम: किरेन रीजीजू

नईदिल्ली। अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरेन रीजीजू ने बुधवार को उर्दू को 'दुनिया की सबसे खूबसूरत भाषा' बताया और कहा कि देश की प्रगति और एकता के लिए हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सद्भाव आवश्यक है। जामिया मिलिया इस्लामिया के 105वें स्थापना दिवस समारोह में बोलते हुए उन्होंने भारत की साझी संस्कृति और लोकतांत्रिक भावना को प्रतिबिंबित करने के लिए विश्वविद्यालय की प्रशंसा की। मंत्री ने कहा, ''विश्वविद्यालय का आदर्श वाक्य हमारे राष्ट्र के मूल्यों को खूबसूरती से दर्शाता है। मैं आपको याद दिलाना चाहूंगा कि महात्मा गांधी और सरोजिनी नायडू जैसी महान हस्तियों ने इस विश्वविद्यालय की स्थापना के समय इसका समर्थन किया था।'' विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) के कार्यान्वयन की सराहना करते हुए रीजीजू ने कहा कि वह इसके अकादमिक स्कोर्ड और राष्ट्रीय रैंकिंग से 'बेहद प्रभावित' हैं। लोकतंत्र में खुली बहस के महत्व पर जोर देते हुए उन्होंने कहा, ''हमारे लोकतंत्र में लोग अपने विचार आक्रामक रूप से व्यक्त करते हैं, जिससे कभी-कभी ध्रुवीकरण पैदा होता है। लेकिन यह

तब तक बुरा नहीं है जब तक कि इससे देश को नुकसान न हो।'' रीजीजू ने कहा कि संसद में अक्सर शोर-शराबे वाली बहसें होती हैं, फिर भी यह विविध विचारों को व्यक्त करने का सबसे अच्छा मंच है। उन्होंने कहा, ''संसदीय कार्य मंत्री के रूप में सदन चलाना कभी-कभी कठिन होता है। लेकिन संसद में अराजकता एक जीवंत लोकतंत्र की निशानी है।'' उन्होंने कहा कि व्यवधानों के बावजूद, महत्वपूर्ण कानून अंततः 'राष्ट्रहित में' पारित होते हैं। मंत्री ने भारत की संवैधानिक शक्ति और विविधता पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा, ''संविधान के कारण हम सुरक्षित रहेंगे, क्योंकि यह समस्या के हर पहलू को शामिल करता है और उसका समाधान प्रदान करता है।'' रीजीजू ने कहा कि सामाजिक सद्भाव बनाए रखना एक सामूहिक जिम्मेदारी है।

पीएम मोदी के सबसे बड़े प्रशंसक जगदीप धनखड़ 100 दिनों से चुप क्यों? कांग्रेस ने पूछा- आखिर क्या है रहस्य?

नई दिल्ली । कांग्रेस ने बुधवार को कहा कि पूर्व उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ को अपने पद से इस्तीफा दिए 100 दिन बीत गए हैं, लेकिन वह अब तक खामोश हैं और उनका विदाई समारोह भी नहीं हुआ है। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने एक बार यह दावा किया था कि धनखड़ को त्यागपत्र देने के लिए मजबूर किया गया था। धनखड़ ने इस साल संसद के मानसून सत्र की शुरुआत में ही स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। इसके बाद हुए चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के उम्मीदवार सी पी राधाकृष्णन नए उपराष्ट्रपति निर्वाचित हुए। रमेश ने एक्स पर पोस्ट किया, भारतीय राजनीति के इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना को घटित हुए ठीक 100 दिन हो गए हैं। 21 जुलाई की देर रात अचानक और आश्चर्यजनक रूप से, भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने इस्तीफा दे दिया था। उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर किया गया था, भले ही उन्होंने दिन-ब-दिन प्रधानमंत्री की प्रशंसा की हो। उन्होंने कहा, रोजाना सुर्खियों में रहने वाले पूर्व उप राष्ट्रपति 100 दिनों से बिल्कुल खामोश हैं। रमेश ने कहा, राज्यसभा के सभापति के रूप में पूर्व उप राष्ट्रपति विपक्ष के अच्छे मित्र नहीं थे। वह लगातार और गलत तरीके से विपक्ष की खिंचाई करते रहते थे। फिर भी, लोकतांत्रिक परंपराओं को ध्यान में रखते हुए, विपक्ष कहता रहा है कि वह कम से कम अपने सभी पूर्ववर्तियों की तरह विदाई समारोह के हकदार हैं। ऐसा नहीं हुआ है। भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ अपने अप्रत्याशित इस्तीफे के बाद 100 दिनों तक पूरी तरह से खामोश रहे, जिससे राजनीतिक हलकों में व्यापक अटकलें और चिंताएँ फैल गईं। 21 जुलाई को, भारतीय राजनीति में अभूतपूर्व माने जाने वाले एक कदम के तहत, धनखड़ ने स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए अपना इस्तीफ़ा दे दिया, जबकि उन्होंने सार्वजनिक रूप से प्रधानमंत्री की प्रशंसा की थी। यह निर्णय एक आश्चर्य की बात थी, जिससे एक खालीपन और अनुत्तरित प्रश्नों का एक सिलसिला पैदा हो गया। कांग्रेस नेताओं ने, राज्यसभा के सभापति के रूप में विपक्ष के साथ उनके प्रतिकूल संबंधों को उजागर करते हुए, लोकतांत्रिक परंपराओं के अनुरूप उन्हें उचित विदाई देने का आह्वान किया है। पार्टी ने सरकार से धनखड़ के इस्तीफ़े के पीछे के वास्तविक कारणों पर स्पष्टता प्रदान करने का भी आग्रह किया है।

एक बार क्लाउड सीडिंग करने पर कितना खर्च? दिल्ली के मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने दी जानकारी

नई दिल्ली । दिल्ली की रेखा गुप्ता सरकार द्वारा प्रदूषण कम करने के लिए किए गए क्लाउड सीडिंग के दो ट्रायल उम्मीद के मुताबिक सफल नहीं रहे. पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने बताया कि इस असफलता की मुख्य वजह बादलों में नमी की कमी रही. एबीपी न्यूज़ से खास बातचीत के दौरान मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने बताया कि एक बार क्लाउड सीडिंग करने का खर्च करीब 30 से 35 लाख रुपये आता है. जबकि 9-10 बार के ऑपरेशन में लगभग 3 करोड़ रुपये तक का खर्च होता है उन्होंने कहा कि आईआईटी कानपुर और दिल्ली सरकार ने मिलकर दो बार क्लाउड सीडिंग का प्रयास किया, लेकिन पर्याप्त नमी न होने के कारण बारिश नहीं हो सकी. सिरसा ने आगे बताया कि मंगलवार को ट्रायल के दौरान वातावरण में केवल 15 फीसदी नमी थी, जबकि कृत्रिम वर्षा के लिए कम से कम 50 फीसदी नमी जरूरी होती है. हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि आईआईटी कानपुर की टीम ने जो नया केमिकल मिश्रण तैयार किया है, उससे भविष्य में कम नमी के बावजूद भी कृत्रिम बारिश कराई जा सकती है. मंत्री ने बताया कि भारत मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार शाम तक नमी बढ़ने की संभावना है. इसलिए जैसे ही मौसम अनुकूल होगा, क्लाउड सीडिंग का अगला ट्रायल फिर से किया जाएगा. उन्होंने कहा हमारी कोशिश जारी रहेगी. इस बीच, आम आदमी पार्टी के नेता और पूर्व स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज ने इस प्रयोग पर सवाल उठाए हैं. उनका कहना है कि यह जनता के पैसे की बर्बादी है. इस पर जवाब देते हुए सिरसा ने कहा जब उनकी सरकार थी, तब वो दस साल तक क्लाउड सीडिंग की बात करते रहे लेकिन एमओयू तक साइन नहीं किया. हमने प्रयास किया, पहली बार ट्रायल किया, नतीजे तुरंत नहीं मिले तो क्या हुआ- हम हार नहीं मानेंगे. सिरसा ने आगे कहा कि सौरभ भारद्वाज की आलोचना केवल खिसियाहट है क्योंकि उनकी सरकार ने सिर्फ बातें कीं, जबकि मौजूदा सरकार ने काम करके दिखाया. गौरतलब है कि दिल्ली में पहली बार कृत्रिम वर्षा की कोशिश आईआईटी कानपुर के वैज्ञानिकों की मदद से की गई है. इसका मकसद वायु प्रदूषण कम करना और राजधानी की वायु गुणवत्ता में सुधार लाना है. यह तकनीक अमेरिका, चीन और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों में पहले से सफल रही है, जहां इसे सूखे और प्रदूषण से निपटने के लिए अपनाया गया है.

मोदी ने ट्रंप से बनाई दूरी-अभी नहीं होगा आमना-सामना

कुआलालंपुर के चमकदार सम्मेलन केंद्रों में जहां दक्षिण-पूर्व एशिया के नेता बहुपक्षीय भविष्य की रूपरेखा तय करने के लिए जुटे, वहां एक खाली कुर्सी बहुत कुछ कह गई। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जो अब तक लगभग हर महाद्वीप पर भारत की पहचान दर्ज कराने पहुंचे हैं, इस बार 47वें आसियान शिखर सम्मेलन और 22वें आसियान-भारत सम्मेलन में वर्चुअली हिस्सा लिया। उनकी यह अनुपस्थिति सबके बीच चर्चा का विषय बन गई है। सवाल उठ रहा है कि क्या दिल्ली अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से होने वाली किसी कूटनीतिक टकराहट से बचना चाहती है। नई दिल्ली की नजर से देखें तो यह कोई मामूली कार्यक्रम टालने की बात नहीं, बल्कि एक सोची-समझी रणनीति है। वाशिंगटन के साथ चल रहे जटिल रिश्तों में यह कदम उस उच्च दांव वाले खेल का हिस्सा है जहां कभी आर्थिक आदेशों को गठबंधन का नाम दे दिया जाता है और कभी रूस से दोस्ती को विश्वासघात कहा जाता है। मोदी की आसियान यात्रा हमेशा उनकी सक्रिय विदेश नीति की पहचान रही है। 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद से उन्होंने दस में से आठ आसियान-भारत सम्मेलनों में खुद हिस्सा लिया है। उन्होंने इस साझेदारी को एक सौ तीस अरब डॉलर वार्षिक व्यापार वाले मजबूत आर्थिक रिश्ते में बदल दिया। मगर अब यह मंच भी अहंकारों की भिड़ंत का हिस्सा बन गया है, जहां सहमति की जगह टकराव बढ़ने लगा है। दुनिया के दो सबसे प्रभावशाली नेता, भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, मानो एक अजीब से कूटनीतिक नृत्य में फंस गए हैं। दोनों अपने देशों को लोकतंत्र और मुक्त बाजार के डंकेबरदार बताते हैं लेकिन एक-दूसरे से आमने-सामने मिलने से बच रहे हैं। कुआलालंपुर में होने वाला आगामी आसियान-भारत सम्मेलन जिसमें ट्रंप पहुंचे और मोदी ऑनलाइन शामिल हुए, दोनों नेताओं के बीच बढ़ते अविश्वास का ताजा उदाहरण बन गया है। यह शिखर सम्मेलन मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम की मेजबानी में हुआ, जहां दस आसियान सदस्य देश इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड, वियतनाम, फिलिपींस, ब्रूनेई, कंबोडिया, लाओस और म्यांमार के साथ भारत, चीन, जापान, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका जैसे संवाद साझेदार भी शामिल हुए। सम्मेलन का विषय है कनेक्टिविटी और रेजिलिएंस, यानी आर्थिक सुधार, समुद्री सहयोग और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में डिजिटल एकीकरण पर जोर। भारत ने अपनी 'एक्ट ईस्ट नीति' के तहत हमेशा आसियान को अपनी पूर्वी कूटनीति का मुख्य स्तंभ माना है। इसलिए मोदी का कुआलालंपुर न जाना उनकी पिछली परंपरा से स्पष्ट विचलन माना जा रहा है। 2014 से अब तक मोदी लगातार हर आसियान-भारत या ईस्ट एशिया शिखर सम्मेलन में मौजूद रहे हैं। आसियान और भारत के विदेश मंत्रालय के रिकॉर्ड बताते हैं कि उन्होंने 2014 के 12वें सम्मेलन से लेकर 2024 के 21वें सम्मेलन तक कभी एक भी बैठक नहीं छोड़ी। इन बैठकों में मोदी ने दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ भारत के आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा दिया, सामरिक साझेदारी को मजबूत किया और इस क्षेत्र में भारत को एक संतुलनकारी शक्ति के रूप में स्थापित किया, जो चीन की बढ़ती दखल और अमेरिका की अप्रत्याशित नीतियों के बीच एक स्थिर आवाज बन सके। नई दिल्ली की ओर से जारी आधिकारिक बयान में कहा गया है कि प्रधानमंत्री का कार्यक्रम बिहार विधानसभा चुनाव और दिवाली के बाद की व्यस्तताओं के कारण बेहद भरा हुआ है लेकिन विशेषज्ञों के अनुसार यह वजह ज्यादा राजनीतिक बहाना लगती है। असल कारण ट्रंप की संभावित उपस्थिति मानी जा रही है। दोनों नेताओं की आखिरी मुलाकात 2025 की शुरुआत में वॉशिंगटन में हुई थी, जो कुछ ही मिनटों की थी और बिना किसी संयुक्त बयान या व्यापार समझौते के समाप्त हो गई थी। कभी दोस्ताना बताए जाने वाले रिश्ते अब स्पष्ट रूप से ठंडे पड़ चुके हैं।

ट्रंप के तीखे बयान कई बार भारत के लिए शर्मिंदगी का कारण बने। उन्होंने दावा किया था कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध रोका, जो दिल्ली के लिए अस्वीकार्य था। एक और बयान में उन्होंने कहा कि मोदी ने निजी तौर पर रूस से तेल आयात घटाने का वादा किया था, जिसे भारत ने पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया। इन सब ने दोनों देशों के बीच तनाव को और गहरा किया। सिर्फ बयानबाजी ही नहीं, ट्रंप की नीतियों ने भारत की अर्थव्यवस्था पर भी सीधा असर डाला है। अमेरिका ने भारतीय निर्यात पर पचास प्रतिशत तक की टैरिफ वृद्धि कर दी है, यह कहकर कि भारत अनुचित व्यापार प्रथाएं अपनाता है। ऊर्जा क्षेत्र में भी स्थिति तनावपूर्ण है। भारत की तेल जरूरतों का लगभग एक-तिहाई हिस्सा रूस से आता है। ट्रंप प्रशासन ने रूस की कंपनियों रोसनेफ्ट और लुकोइल पर प्रतिबंध लगाकर भारत के रिफाइनरियों को भुगतान और बीमा जैसी समस्याओं में उलझा दिया है। ट्रंप का यह बयान कि जो देश रूसी तेल खरीदते हैं, वे अप्रत्यक्ष रूप से आक्रमण को वित्तपोषित करते हैं, स्पष्ट रूप से भारत पर निशाना था। रीसेट डिप्लोमेसी की जो बातें कुछ महीने पहले चल रही थीं, वह अब नतीजे नहीं दे पाई हैं। बयान और हकीकत के बीच की दूरी अब एक खाई बन चुकी है। ऐसे में मोदी का ट्रंप के साथ सार्वजनिक मंच साझा करना जोखिम भरा कदम होता। अमेरिकी राष्ट्रपति का कोई भी असंवेदनशील बयान पूरे सम्मेलन की दिशा बदल सकता था और भारत की सधी हुई विदेश नीति को झटका दे सकता था। इसलिए मोदी ने अपने आपको उस कूटनीतिक नाटक से बचा लिया। वर्चुअल रूप में शामिल होकर उन्होंने भारत की उपस्थिति तो दर्ज रखी, लेकिन किसी विवाद की संभावना से भी दूरी बनाए रखी, हालांकि यह फैसला प्रधानमंत्री के लिए राजनीतिक रूप से आसान नहीं था। मोदी की छवि हमेशा एक विश्व-स्तरीय नेता की रही है, जो हर मंच पर नजर आता है।

अब उनकी अनुपस्थिति पर विपक्ष ने निशाना साधा है। कहा जा रहा है कि जो नेता कभी वैश्विक मंचों पर सबसे आगे खड़ा रहता था, अब मुश्किल सवालों से बच रहा है। विपक्षी दलों का कहना है कि मोदी जो कभी ट्रंप जैसे नेताओं के साथ मंच साझा करते थे, अब उनसे दूरी बना रहे हैं। मोदी का वर्चुअल हिस्सा लेना एक अल्पकालिक रणनीति कहा जा सकता है जिससे तत्काल विवाद तो टल गया लेकिन भारत की विदेश नीति में एक तरह की झिझक उजागर हुई है। इससे भारत को आसियान के कई महत्वपूर्ण नेताओं जैसे अनवर इब्राहिम, फूमियो किशिदा और फर्डिनांड मार्कोस जूनियर के साथ व्यक्तिगत बातचीत का मौका नहीं मिला। अक्सर ऐसी मुलाकातें औपचारिक भाषणों से कहीं अधिक असरदार साबित होती हैं। इससे भारत अपने दीर्घकालिक हितों के लिए आवश्यक प्रभाव बना सकता था। यह पूरा प्रकरण यह भी दर्शाता है कि भारत-अमेरिका रिश्तों में अनिश्चितता बढ़ती जा रही है। ट्रंप की अमेरिका फर्स्ट नीति और उनका तुनकमिजाज रवैया कई सहयोगियों को परेशान कर चुका है। उनकी आर्थिक राष्ट्रवाद वाली सोच ने साझेदारी की जगह प्रतिस्पर्धा और टकराव को बढ़ावा दिया है। दूसरी ओर मोदी ने संयम और संतुलन की नीति अपनाई है। इन दोनों नेताओं के अलग-अलग स्वभाव ने कभी दोस्ती की मिसाल कही जाने वाली साझेदारी को अब सावधानी भरे दूरी के रिश्ते में बदल दिया है, मगर दुनिया के लिए यह खामोशी खतरनाक है क्योंकि वैश्विक व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा और एशिया की स्थिरता दोनों देशों के बीच सहयोग पर निर्भर है। आने वाले समय में मोदी को शायद ट्रंप की धौंसभरी शैली का सामना करना ही पड़ेगा। भारत, जो दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, उसे दुनिया के सबसे ताकतवर लोकतंत्र से डरता हुआ नहीं दिखना चाहिए। आखिरकार, नेतृत्व का मूल्यांकन इस बात से नहीं होता कि कोई नेता कितने सम्मेलन में गया, बल्कि इससे होता है कि वह सबसे कठिन मंच पर कितनी दृढ़ता से अपनी बात रखता है। फिलहाल मोदी की यह वर्चुअल उपस्थिति उन्हें ट्रंप की सीधी टक्कर से बचा सकती है। अब सवाल यह नहीं कि मोदी ट्रंप से कब मिलेंगे, बल्कि यह है कि मोदी फिर कब वह भूमिका निभाएंगे जिसमें वे भारत की आवाज को वैश्विक कूटनीति के असली मंच पर सबसे आगे रख सकें सिर्फ स्क्रीन के पीछे नहीं, बल्कि दुनिया की आंखों के सामने।

सम्पादकीय...

न किसी की आंख का नूर हूं, न किसी के दिल का क़रार

कितना है बदनसीब जफर दफ़न के लिए, दो गज जमीन भी न मिली कू-ए-यार में।। यह गजल उस दर्द और हताशा को व्यक्त करती है जो उन्हें रंगून (म्यांमार) में निर्वासन में अपनी मृत्यु और भारत की जमीन में दफन होने की चाहत के साथ महसूस हुई थी और जिसमें उन्हें अमर कर दिया। आज भी और पहले भी मुशायरों के बड़े शौकीन थे लोग। मुगलिया दौर में शायरों की बड़ी चांदी हुआ करती थी। मिर्ज़ा ग़ालिब, मोमिन खान मोमिन, मुंशी मुहम्मद अली 'तिशना', मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली, शेख मुहम्मद इब्राहिम 'ज़ौक़', आगा जान 'ऐश', हाफ़िज़ गुलाम रसूल 'शौक़', मुफ्ती सदुद्दीन आज़ुर्दा, दाग़ देहलवी, बाल मुकुंद हुज़ूर, हकीम सुखानंद 'रक़म' आदि जैसे बड़े नामचीन शायर हुआ करते थे। गंगा-जमुना तहज़ीब थी और उर्दू व फ़ारसी का चलन था। शहंशाह बहादुर शाह जफर के समय उर्दू लश्कर से निकल कर पूर्ण रूप से विकसित हो चुकी थी। उर्दू और फारसी के साथ हिंदी और संस्कृत का भी बोलबाला था। लाल किले का आ?खिरी मुशायरा 29 अक्तूबर 1851 को हुआ था और उस समय के शासन के लिए यह समय बड़ा ही संकीर्ण और दुविधापूर्ण समय था, क्योंकि फिरंगी अंग्रेजों ने भारत वासियों का जीना हराम कर रखा था। वे किसी भी प्रकार से भारत को गुलाम बनाना चाहते थे। हुमायुं, अकबर, शाहजहां आदि के समय पर तो किसी की हिम्मत नहीं थी कि भारत को टेढ़ी आंख से देख ले, मगर बहादुर शाह जफर को कुछ अति खुराफ़ाती और देशद्रोही मीर जाफरों और जय चंदों के कारण बड़ी समस्याएं आईं, जिसके कारण स्वयं एक चोटी का शायर होते हुए उन्हें लाल किले में आखरी मुशायरा करना पड़ा। एक ओर तो बहादुर शाह जफर का स्वास्थ्य गिर रहा था व अंग्रेज उन्हें उनके समय से पहले ही समाप्त करना चाह रहे थे और दूसरी ओर अपने ही परिवार में उनकी औलादें बटी हुई थीं। इन सभी जटिल बातों का सफ़ल रूपांतरण अपने नाटक लाल किले का आ?खिरी मुशायरा में, दिल्ली में रंगमंच के शहंशाह, डॉ. सईद आलम ने किया है और जब भी यह नाटक दिल्ली, भारत या विदेश में होता है तो इसे देखने वाले लगभग ग़ैर उर्दू भाषाई और ग़ैर मुस्लिम ही होते हैं जो इस बात का प्रमाण भी है कि हमारी संस्कृति साझा विरासत और आपसी भाईचारे का प्रतीक है, ठीक इसी प्रकार जब दशहरे के दिनों में सवारी दिल्ली के चांदनी चौक, सीताराम बाज़ार, हौज़क़ाज़ या अजमेरी गेट से निकलती है तो सैकड़ों की संख्या में बुर्क़ापोश, मुस्लिम महिलाएं अपने बच्चों के साथ न केवल सवारी देखती हैं, बल्कि उसके बाद अपने बच्चों के लिए श्री कृष्ण, अर्जुन, श्री राम, लक्ष्मण आदि के मुखौटे, तीर-कमान, तलवारें आदि खिलौने भी खरीदती हैं। यही हमारी मिलीजुली संस्कृति है। वैसे भी अन्य नाटकों, जैसे, रामायण, महाभारत, ग़ालिब इन दिल्ली, मौलाना आज़ाद, चाचा छक्कन आदि नाटकों का संचालन करते रहते हैं आलम और इस बात की बड़ी हैरानी होती है कि एक हज़ार से एक सौ रुपए के टिकटों में भी हॉल सदा ही हाउसफुल रहता है। एक अन्य खास बात यह कि इनके सभी पात्र बड़े अच्छे घरों से आते हैं और प्रोफेशनली बड़े स्थानों में कार्यरत हैं दिल में उर्दू तहज़ीब व उर्दू भाषा से इतना प्यार है कि अब वे उर्दू के ग़ैर उर्दू झंडा बरदार भी हैं, जिस प्रकार से एक पंजाबी को ठेठ बिहारी भाषा में निपुण कर दिया और एक बिहारी को ठेठ पंजाबी भाषा में परफेक्ट पात्र बना दिया, यह सईद का ही कमाल है, जिसे हम, मिर्ज़ा ग़ालिब इन दिल्ली और चाचा छक्कन में ही देख सकते हैं। इसी प्रकार से महाभारत और रामायण के रूपांतरण में उन्होंने हिंदी और संस्कृत के सभी घोड़े खोल दिए। सच है, रंगमंच की दुनिया का अलग ही आनंद है। मौलाना आज़ाद सईद आलम के अनुसार उनके रंगमंच जीवन का सब से सफल नाटक है, क्योंकि उसमें उन्होंने विश्व प्रख्यात एक्टर टॉम ऑल्टर को मौलाना आज़ाद वाली उर्दू सिखा कर एक अजूबा कर दिया है। यही नहीं, किस प्रकार से पंडित नेहरू ने भारत के विभाजन में प्रथम प्रधानमंत्री बनने के लिए सरदार पटेल का हक मारा था, टॉम ऑल्टर के आज़ाद के किरदार द्वारा बखूबी दर्शाया है। लाल किले का आ?खिरी मुशायरा में बहादुर शाह जफर की बदनसीबी और शायरों की कमनसीबी के अनेकों शेर हैं, जैसे, लगता नहीं है दिल मेरा उजड़े दयार में ! कह दो उन हसरतों से कहीं और जा बसें। आज न उर्दू की न वे महफ़िलें हैं और न ही वे पुराने मुशायरे सिवाय डीसीएम मुशायरा, मुशायरा जश्न-ए-बहार और उर्दू एकेडमी मुशायरा, मगर कहीं न कहीं आलम की शक्ल में आज भी उर्दू की लौ सांस ले रही है! क्या खूब कहा है, ज़ौक़ ने दलाई हयात आए, कज़ा के चली चले, अपनी खुशी न आए, न अपनी खुशी चले!

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 - चुनावी वादों व वास्तविक परिणामों के बीच अक्सर बहुत बड़ी खाई होती है?

वैश्विक स्तरपर दुनियाँ के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के एक राज्य बिहार का विधानसभा चुनाव 2025 सभी 243 सीट पर दो चरण में चुनाव होंगे। पहले चरण के लिए 6 नवंबर को और दूसरे चरण के लिए 11 नवंबर को वोटिंग होगीवहीं, चुनाव के नतीजे 14 नवंबर को जारी किए जाएंगे, चुनाव का आयोजन ऐसे समय पर हो रहा है जब भारत का राजनीतिक- सामाजिक परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। राज्य में विगत दशकों से गरीबी, बेरोज़गारी, किसान समस्या, आधारभूत सुविधाओं की कमी, प्रवासन-मुद्दा जैसी कई प्रश्न बने हुए हैं।ऐसे में जब प्रमुख राजनीतिक दलों ने यह दावा किया है कि यदि उनकी सरकार बनेगी तो सत्ता में रहकर 'समृद्धि -युग' की तरह का शासन लागू करेंगे, तो यह दावा महज़ चुनावी वादा नहीं बल्कि एक रणनीतिक एवं प्रतीकात्मक प्रस्ताव भी बन गया है। इस लेख का उद्देश्य उन वादों को अंतरराष्ट्रीय अर्थों में देखना है कि ये वादे किस प्रकार समकालीन लोकतंत्र, विकास, सामाजिक न्याय तथा नीति क्रियान्वयन की चुनौतियों से टकरा रहे हैं; और उन्हें सफलता पूर्वक लागू होने की दृष्टि से कहाँ-कहाँ मुश्किलें हैं। इस बार बिहार में कुल 243 सीटों वाली विधानसभा के लिए मतदान हो रहा है, जिसमें विभिन्न दल तथा गठबंधन बड़े पैमाने पर चुनावी मैदान में हैं।राज्य के भीतर विकास-प्रगति की पुरानी कहानियाँ भी हैं,लेकिन उन्हें अब तक पूरी तरह सफल नहीं कहा जा सकता। ऐसे में जब राजनीतिक दल बड़े-बड़े वादे कर रहे हैं,जैसे पर्याप्त रोजगार, सामाजिक सुरक्षा, घोषणाएँ पेंशन-भत्तों की, स्थानीय प्रतिनिधियों को सुविधा-आधार देना,यह महज घोषणाएँ नहीं बल्कि चुनावी विमर्श का केंद्र बन चुकी हैं। जब राजनीतिक दलों द्वारा यह कहा जाता है कि हम ऐसा शासन लाएँगे कि 'समृद्धि- युग जैसा होगा, तो यह एक प्रतीकात्मक भाषा है जिसमें अपेक्षा है कि गरीबी और असमानताओं का अंत हो, सुशासन कायम हो, प्रत्येक नागरिक को अवसर मिले, सुरक्षित एवं सम्मानित जीवन मिले। भारतीय सार्वभौमिक मिथकों में,'समृद्धि-युग उस युग को कहते हैं जहाँ धर्म, समता, न्याय पूर्ण रूप से थे। इसे राजनीतिक रंग में मोड़ना महत्वपूर्ण है,यह दर्शाता है कि दल चाहते हैं कि जनता उन्हें सिर्फ सफल शासन नहीं बल्कि एक प्रकार का उत्कृष्ट शासन अपेक्षित करती है।

इस रूपक में वादों का स्वरूप है- यदि हम सत्ता में आएंगे, तो राज्य हमारे तरीके से बदलेगा, व्यवस्था हमारी तरह बनेगी। साथियों बात अगर हम चुनावी वादों के व्यावहारिक अर्थ को समझने की करें तो,वास्तव में, इन वादों के पीछे कुछ स्पष्ट नीतिगत बिंदु हैं,जैसे रोजगार सृजन, पंचायत सीटों का सशक्तिकरण,सामाजिक सुरक्षा, महिला -सशक्तिकरण, भूमि सुधार, शराब नीति की समीक्षा, आधारभूत सुविधाओं का विस्तार आदि। इससे यह स्पष्ट है कि प्रमुख दलों ने 'सामाजिक न्याय' और 'सकल विकास' की भाषा को अपनाया है। इस अर्थ में इन वादों का स्वर अंतरराष्ट्रीय विकास व राजनीति-विज्ञान के संदर्भ से भी देखा जा सकता है,जिसमें 'जन कल्याण', 'नीतिगत समावेशन','भेदभाव न्यूनीकरण' जैसे उद्देश्य शामिल हैं,हालांकि वादे सुंदर लगते हैं, लेकिन उनका क्रियान्वयन सहज नहीं है।

विकास-प्रबंधन, वित्तीय संसाधन की कमी, बुनियादी प्रशासनिक ढांचे की जटिलताएँ, चयन प्रक्रिया एवं भ्रष्टाचार- प्रवृत्तियाँ, राजनीतिक बदलता गठबंधन- परिस्थितियाँ ये सभी अवरोध हैं। उदाहरण स्वरूप, बिहार में अब तक विकास के वादे किए गए, लेकिन राज्य लगातार सुस्त विकास दर, उच्च प्रवासन दर व अर्थव्यवस्था की कमजोरियों से जूझ रहा है। जब एक राजनीतिक दल कहता है कि हर परिवार को सरकारी नौकरी मिलेगीतो यह बजट- संसाधन,भर्ती-नीति, प्रशिक्षण- संस्थान, पारदर्शिता व निष्पादन की चुनौतियों को सामने लाता है। इसी तरह, बड़ी सामाजिक-निति घोषणाएँ जैसे 'भूमिहीनों को भूमि' या '65 व आरक्षण' केवल घोषणा ही नहीं, बल्कि विस्तृत कानूनी, आर्थिक, प्रशासनिक तैयारी और संभवतः संवैधानिक चुनौतियों का सटीक सामना करती है। साथियों बात अगर हम चुनावी वादों के अंतरराष्ट्रीय- सापेक्ष रूप में विश्लेषण की करें तो,दुनियाँ के विभिन्न लोकतंत्रों में भी पार्टियों द्वारा बड़े वादे करना आम बात है जैसे 'सर्वस्व रोजगार','समान अवसर', 'सामाजिक कल्याण राज्य' इत्यादि। लेकिन अंतरराष्ट्रीय अनुभव यह दिखाता है कि वादों और वास्तविक परिणामों के बीच अक्सर एक खाई होती है।अन्तरराष्ट्रीय विश्लेषण से यह भी निकलता है कि जब कोई सरकार बड़े वायदे करती है, तो उसे 'प्रदर्शन योग्य संकेत' पारदर्शिता, जवाबदेही तथा समय-बद्धता की आवश्यकता होती है। उदाहरण स्वरूप, यदि घोषणाएँ इसकी समयसीमा या मापदंडों के साथ नहीं हों तो वे मात्र चुनावी घोषणा रह जाती है। इस दृष्टि से, बिहार के वादों को मापने योग्य लक्ष्य-रीति के साथ देखना होगा।वस्तुतः इन वादों के माध्यम से राजनीतिक दल चुनाव में दो प्रमुख रणनीतिक धारणाएँ ले चले हैं- (1)बहुँ-मुखी कल्याण - वाद अर्थात् प्रत्यक्ष लाभ-वाद तथा (2) पहचान-वाक्य, उदाहरण के लिए 'बिहारियत गौरव', 'गरीब-वर्ग की आवाज', 'पिछड़े/दलित/ओबीसी वर्ग का अधिकार'। यह रणनीति सिर्फ स्थानीय चुनावी भूगोल तक सीमित नहीं है बल्कि वैश्विक संदर्भ में देखा जाए तो वोटबेस की उम्मीदों का प्रबंधनकहलाती है। जब एक दल कहता है कि यदि हम आएँगे तो राज्य का चित्र बदल जाएगा, तो यह न केवल एक राजनीतिक वादा होता है बल्कि एक प्रतीकात्मक प्रस्ताव होता है कि 'आपका जीवन बदलेगा, आप अगली कड़ी के विकास-युग में होंगे',इसके साथ ही, इस प्रकार के वादे यह संकेत देते हैं कि राज्य-प्रशासन, सरकार-यंत्रणा, सार्वजनिक- नीति को पुनः स्थापित किया जाएगा। अर्थात्, यह सिर्फ नया स्कीम व योजना नहीं, बल्कि 'राजनीति-सेवा' के स्वरूप का परिवर्तन है। उपरोक्त रूपक में उत्कृष्ट शासन बनाना दरअसल एक भाषा है जो कहती है- हम पुरानी राजनीति को खत्म करेंगे, हम नया मॉडल लाएँगे। साथियों बात अगर हम वादा- भाषा में कुशल से उत्कृष्ट शासन की रूपक उत्तेजक है इसको समझने की करें तो, सामाजिक विज्ञान में यह देखा गया है कि बहुत ऊँची उम्मीदें एवं कम परिणाम सामाजिक -राजनीतिक अस्थिरता पैदा कर सकते हैं। इसलिए इस रूपक- उपयोग में यह सावधानी जरूरी है कि घोषणा- वाक्य के साथ कार्यान्वयन-योजना भी हो, इस पर बिहार की जनता ने जरूर ध्यान देना चाहिए। बिहार की सामाजिक-आर्थिकवास्तविकताएँ वादों की परछाई से बहुत जटिल है। उदाहरणार्थ- राज्य में उच्च प्रवासन दर है; युवा रोजगार पर्याप्त नहीं है; इसीलिए ही एक पार्टी के संस्थापक ने कहा है कि हमें सस्ता डेटा नहीं, अपना बेटा चाहिए, जो बाहर में नौकरियां कर रहे है और अभी बिहार में छठ पूजा मनाने ट्रेनों में भारी भरकम भीड़ में टॉयलेट पर बैठकर सोकर आए है हम उन्हें रोजगार देंगे उन्होंने उनको आव्हान किया है कि 14 तारीख तक यहीं रहे और हमारी पार्टी आ गई तो फैक्ट्री मालिक को संदेश भेज दें कि हमें यहां रोजगार मिल जाएगा हमें वापस नहीं आएंगे परंतु उसका कुछ रोड मैप बताया नहीं गया है।कृषि-निर्भरता अभी भी बहुत अधिक है;शिक्षा-स्वास्थ्य-आधारभूत सुविधाओं में कमी है, इन परिस्थितियों में जब वादे,जैसे हर परिवार को नौकरी, भूमिहीन को भूमि, पंचायती प्रतिनिधि को पेंशन/बीमा दिए जा रहे हैं, तो यह जरूरी है कि राज्यों की वित्तीय स्थिति, केंद्र-राज्य संबंध, राज्य-प्रशासन की दक्षता और निजी-क्षेत्र की भागीदारी पर गंभीर विचार किया जाए। उदाहरण स्वरूप, सरकारी नौकरी देने का वादा तभी व्यवहार्य होगा जब राज्य-सरकार योग्य संसाधन जुटा सके, भर्ती- प्रक्रिया पारदर्शी हो,और सरकारी पदों की संख्या पर्याप्त हो। इन सबमें समय,संसाधन,प्रशासनिक इच्छाशक्ति और निगरानी-यंत्रणा महत्वपूर्ण है। साथियों बात अगर हम 'यदि'-का प्रश्न को लेकर इसका विश्लेषण करें तो, जितना वादा किया गया है, उतनी ही बड़ी चुनौतियाँ भी सामने है। यदि क्रियान्वयन में चूक हुई, तो यह वादे जनता- विश्वास को प्रभावित कर सकते है। नीचे कुछ 'यदि'-प्रश्न दिए जा सकते हैं,(1)यदि पर्याप्त वित्तीय संसाधन नहीं मिले, तब कौन-से वादे प्राथमिकता के आधार पर पूरे होंगे?,(2)यदि भर्ती-नीति या भूमि- वितरण में समय-अवरोध, कानूनी चुनौतियाँ या भ्रष्टाचार हुआ, तो परिणाम क्या होंगे?,(3)यदि आर्थिक परिस्थितियाँ, जैसे वैश्विक मंदी, राजस्व-घाटा, बजट- दबाव बिगड़ गईं,तब योजनाएँ कैसे टिकेंगी?(4)यदि निगरानी तथा जवाबदेही की व्यवस्था कमजोर रही, तब जनता को भरोसा कैसे बना होगा? (5) यदि वादों के पूरा न होने पर राजनीतिक असंतोष बढ़ा, तो राज्य-स्थिरता पर क्या प्रभाव होगा? इसलिए हमें सार्वभौमिक तल एवं वैश्विक स्तरपर ध्यान देने की आवश्यकता है कि वैश्विक राजनीति -विज्ञान में हमें यह सीख मिलती है कि वादों का असर तभी दीर्घकालीन होता है जब वे संस्था-निर्माण, जवाबदेही सुधार,संसाधन संकलन एवं परिचालन दक्षता-वर्धन के साथ हों। उदाहरण स्वरूप,कई विकासोन्मुख देशों में कल्याण- राज नीतियों ने सफलता पाई है क्योंकि उन्होंने वित्तीय व प्रशासनिक स्थिरता बनाई।

फिर चर्चा में हलाल सर्टिफिकेशन

उत्तर प्रदेश में हलाल सर्टिफिकेशन एक बार फिर चर्चा में है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राज्य में हलाल-प्रमाणित उत्पादों की बिक्री और खरीद पर हाल ही में लगे प्रतिबंध का पुरजोर बचाव किया है। उन्होंने आरोप लगाया कि ऐसे प्रमाणन से जुटाई गई राशि का आतंकवाद, लव जिहाद और धर्मांतरण के लिए दुरुपयोग किया जा रहा था। आरएसएस शताब्दी समारोह में बोलते हुए आदित्यनाथ ने कहा कि हलाल प्रमाणन सरकारी नियंत्रण से बाहर एक समानांतर, अनियंत्रित प्रणाली बन गई थी। यूपी में हलाल सर्टिफिकेशन को पूरी तरह बंद कर दिया गया है। मुख्यमंत्री के बयान के बाद हलाल सर्टिफिकेट पर राजनीति गरमा गई है। विपक्षी दलों ने निशाना साधा है। ज्ञात हो कि नवंबर 2023 में उत्तर प्रदेश सरकार ने एक अधिसूचना जारी कर हलाल प्रमाणन वाले खाद्य उत्पादों के उत्पादन, भंडारण, वितरण और बिक्री पर रोक लगा दी थी, जबकि निर्यात के लिए निर्मित उत्पादों को छूट दी गई थी। हलाल सर्टिफिकेशन के खिलाफ लखनऊ में देश का पहला केस दर्ज किया गया था। इसमें 4 के खिलाफ चार्जशीट भी दाखिल की गई थी। हलाल एक अरबी शब्द है, जिसका अर्थ होता है वैध या अनुमति प्राप्त। आमतौर पर यह शब्द मांस के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है। इस्लामिक मान्यताओं के अनुसार, हलाल तरीके से मांस तैयार करने में जानवर को झटके से नहीं काटा जाता, बल्कि धीरे-धीरे उसकी गर्दन से खून निकाला जाता है। इससे शरीर में ब्लड क्लॉटिंग नहीं होती और पूरा खून बाहर निकल जाता है। ऐसे मांस को इस्लाम में 'जिबह' कहा जाता है और इसी मांस को खाना जायज माना गया है। हालांकि, अब हलाल शब्द सिर्फ मांस तक सीमित नहीं रहा। आजकल खाने-पीने, कॉस्मेटिक और दवाओं तक में यह सर्टिफिकेशन दिया जाता है ताकि यह साबित हो सके कि उनमें कोई हराम तत्व (वर्जित चीज) नहीं है। यानी कि हलाल सर्टिफिकेशन एक तरह का 'पवित्रता प्रमाणपत्र' है जो बताता है कि उत्पाद इस्लामिक मान्यताओं के अनुरूप है और सभी धर्मों के लोग इसे बेझिझक इस्तेमाल कर सकते हैं। मुस्लिम धर्मगुरुओं के अनुसार, हलाल सर्टिफिकेशन सिर्फ मांस ही नहीं, बल्कि खाने-पीने, दवाओं और कॉस्मेटिक उत्पादों से भी जुड़ा है। भारत में हलाल सर्टिफिकेशन अनिवार्य नहीं है, बल्कि यह एक स्वैच्छिक प्रक्रिया है, यानी खाद्य निर्माता को इसे लेना आवश्यक नहीं है। भारत में हलाल सर्टिफिकेशन को सरकार द्वारा राष्ट्रीय मानक के रूप में नियंत्रित नहीं किया गया है। भारत में हलाल सर्टिफिकेट जारी करने का कोई सरकारी तंत्र नहीं है। भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफ.एस.एस.ए.आई) केवल खाद्य सुरक्षा से संबंधित मानक तय करता है लेकिन हलाल सर्टिफिकेट नहीं देता। देश में 'हलाल सर्टिफिकेशन' की सिर्फ 4 संस्थाएं हैं। चारों इस्लामी हैं।भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय ने ही इन निजी संस्थाओं को 'हलाल सर्टिफिकेशन' के लिए अधिकृत किया है। हालांकि इन एजेंसियों की प्रक्रिया को लेकर विवाद भी खड़ा हुआ। आरोप है कि कई कंपनियां बिना जांच के पैसे देकर सर्टिफिकेट हासिल कर लेती हैं। उत्तर प्रदेश में ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जहां फर्जी हलाल सर्टिफिकेशन के जरिए लोगों को गुमराह किया गया। इसी के बाद सरकार ने इस पर सख्त रुख अपनाते हुए इसे प्रतिबंधित करने का निर्णय लिया। सवाल किया जा सकता है कि ऐसा क्यों जबकि 'हलाल सर्टिफिकेशन' सिर्फ मांस तक ही सीमित नहीं है। हालांकि इस सर्टिफिकेशन का चलन 1974 में मांस के लिए ही हुआ था लेकिन 1993 में अन्य उत्पादों पर भी लागू कर दिया गया। अब दूध, दही, पनीर जैसे डेयरी उत्पाद, बिस्कुट, चिप्स, कोल्ड ड्रिंक, मसाले, तेल सरीखे शाकाहारी उत्पाद, फलियां, मेवे, अनाज और चीनी आदि भी ''हलाल सर्टिफिकेशन' के दायरे में हैं। यह दलील दी जाती रही है कि उत्पादों में 'हराम' अथवा निषिद्ध सामग्री (सुअर का मांस और शराब आदि) का उपयोग तो नहीं किया गया, उसके लिए 'हलाल प्रमाणन' अनिवार्य है। बेहद अहम सवाल है कि माचिस, चाय की प्याली, सरिया, सीमेंट, फ्लैट आदि में गैर-इस्लामी सामग्री का कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है लेकिन उन पर भी यह प्रमाणन अनिवार्य है। हास्यास्पद है कि स्कूल, अस्पताल और अर्थव्यवस्था को भी 'हलाल' करार देने की कोशिशें जारी हैं। कुछ कामयाब भी रही हैं। केंद्र में कांग्रेस नेतृत्व की यूपीए सरकार के दौरान भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर रघुराम राजन ने यह विचार दिया था कि बैंकिंग क्षेत्र को भी 'हलाल सर्टिफिकेशन' के दायरे में लाया जाए। यह दीगर है कि ऐसा राजनीतिक तौर पर संभव नहीं हो सका। कई दवाएं और सौन्दर्य प्रसाधन के उत्पाद 'हलाल' की निगरानी में हो सकते हैं, क्योंकि उनमें गैर-इस्लामी, निषिद्ध सामग्री इस्तेमाल की जाती रही है। यह सार्वजनिक मान्यता भी है। भारत में करीब 3200 उत्पाद 'हलाल' के ठप्पे के साथ बिकते हैं। 'हलाल प्रमाणन' की अर्थव्यवस्था ही करीब 8 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच चुकी है। कंपनियां इस प्रमाणन के लिए करीब 66,000 करोड़ रुपए खर्च करती हैं। क्या इस पूरी अर्थव्यवस्था का कोई अधिकृत ऑडिट कराया जाता है इस पूरे प्रसंग में दो अहम सवाल प्रासंगिक हैं। एक, भारत सरकार के पास जांच का सम्यक आधारभूत ढांचा है तो ऐसा सर्टिफिकेशन सरकार या उसकी एजेंसियां क्यों नहीं जारी कर सकतीं दूसरे, यह लाइसेंस 'जमीयत उलेमा-ए-हिन्द', 'हलाल इंडिया प्रा. लिमि.', 'जमीयत उलेमा ए महाराष्ट्र' और 'हलाल सर्टिफिकेशन सर्विसेज इंडिया प्रा. लिमि.' इन चार संस्थाओं को ही क्यों दिए गए क्या इनके पास 'हलाल' जांचने और तय करने की तमाम कसौटियां उपलब्ध हैं किसी गैर-इस्लामी संस्था को यह लाइसेंस क्यों नहीं दिया जा सकता वह ज्यादा तटस्थ और ईमानदार साबित हो सकती है। यह इस्लामी चक्रव्यूह रचा गया है, क्योंकि ओआईसी के अधिकतर इस्लामी देश 'हलाल सर्टिफिकेशन' के बिना उत्पाद कबूल ही नहीं करते हैं। ऐसा ईसाइयों, यहूदियों, जैन, बौद्ध, सिख समुदायों के लिए तो विशेष प्रावधान नहीं किए गए हैं। सूअर का तो क्या, शाकाहारी समुदाय किसी भी प्राणी का वध करके उसका मांस नहीं खाते हैं। उनके लिए तो उत्पादों पर विशेष संकेत छपने चाहिए।

हरियाणा के सूर्यकान्त!

हरियाणा के इतिहास में यह पहली बार हो रहा है कि इस राज्य का कोई विधिवेत्ता देश का मुख्य न्यायाधीश बन रहा है। बेशक हरियाणा पूरे भारत में खेलों में अपना झंडा फहराता रहा है मगर ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भी यह इक्का किसी से पीछे नहीं रहा है। आजादी से पहले पिछली सदी में सर छोटू राम इसी धरती के लाल थे। सर छोटूराम ऐसी हस्ती थे जिन्होंने किसानों से लेकर आम इंसान के जीवन को शिक्षा की रोशनी से भरा था और अंग्रेजों के जमाने के संयुक्त पंजाब प्रान्त (तब पाकिस्तान का पंजाब और भारत का 1966 से पहले का पूरा पंजाब एक ही प्रान्त हुआ करता था)। सर छोटू राम इस पंजाब राज्य के मन्त्री थे और उन्होंने इस क्षेत्र में शिक्षा से लेकर खेती तक में विशद सुधार किये थे। सर्वोच्च न्यायालय के वर्तमान मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति बी.आर. गवई ने जिन जस्टिस सूर्यकान्त का नाम अगले मुख्य न्यायाधीश पद के लिए अग्रसरित किया है वह हरियाणा राज्य के ही हैं और बहुत साधारण परिवार से आते हैं। ऐसा भी संभवतः पहली बार ही हो रहा है कि देश के मुख्य न्यायाधीश पद पर विराजने वाले व्यक्ति की पारिवारिक पृष्ठभूमि बहुत सामान्य है और वह अपने परिवार के पहले पेशेवर वकील रहे हैं। इस पद तक पहुंचने में उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि की कोई भूमिका नहीं है और वह अपनी मेहनत, लगन व बुद्धि चातुर्य के बूते पर ही यहां तक पहुंचे हैं। प्रायः भारत के मुख्य न्यायाधीशों की पारिवारिक पृष्ठभूमि बहुत वजनदार रहती आयी है। न्यायमूर्ति सूर्यकान्त वर्तमान में सर्वोच्च न्यायालय के सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश हैं अतः परम्परा के अनुसार उन्हीं को नया मुख्य न्यायाधीश बनाया जाना था। सरकार किसी मुख्य न्यायाधीश के रिटायर होने से पहले उन्हीं से अगले मुख्य न्यायाधीश के नाम की सिफारिश मांगती है। यह परंपरा भी भारतीय न्याय व्यवस्था में सुस्थापित है। जस्टिस सूर्यकान्त की पढ़ाई किसी विशिष्ट ख्याति लब्ध विश्वविद्यालय में न होकर हरियाणा के हिसार के सरकारी पोस्ट ग्रेजुएट कालेज से हुई। उन्होंने 1981 में इस महाविद्यालय से स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की और 1984 में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक से कानून की तीन वर्षीय स्नातक डिग्री प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने हिसार के जिला न्यायालय में वकालत शुरू कर दी। 1985 में वह चंडीगढ़ चले गये और पंजाब व हरियाणा उच्च न्यायालय में वकालत शुरू कर दी। वहां वकालत करते हुए उन्होंने संवैधानिक मामलों व नागरिक मामलों में विशेषज्ञता हासिल की। इसके चलते उन्हें 2001 में उच्च न्यायालय का वरिष्ठ वकील नियुक्त किया गया। वह इसी वर्ष हरियाणा के एडवोकेट जनरल भी नियुक्त किये गये और 2004 तक उच्च न्यायालय में न्यायाधीश नियुक्त होने तक इस पद पर काम करते रहे। श्री सूर्यकान्त उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति 2004 में ही हो गये। उनकी सेवाओं को देखते हुए उन्हें 2007 में राष्ट्रीय कानूनी सेवा प्राधिकरण के प्रशासी संभाग का सदस्य नियुक्त किया गया। इस पद पर वह 2011 तक रहे। इसके बाद 2018 में वह हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किये गये परन्तु 2019 में ही उन्हें सर्वोच्च न्यायालय में नामांकित कर दिया गया। वर्तमान में वह सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश रहते हुए इसकी विधिक सेवा समिति के अध्यक्ष भी हैं।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार शास्त्री ने बदना ऑफसेट प्रिंटर्स, ए-9, सराय पीपलथला एक्स. दिल्ली-33, से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया सम्पादक : विजय कुमार शास्त्री, मो. : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। (DELHIN/2019/00863)

कुबेरस्थान सीएचसी में बाहरी लोगों का दखल

पडरौना, कुशीनगर।

*औचक निरीक्षण में सीएमओ ने जताई नाराजगी

*प्रभारी को सौंपी संदिग्धों की सूची तैयार करने की जिम्मेदारी

स्थानीय कस्बे के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर इन दिनों बाहरी लोगों और दलालों का दखल बढ़ता जा रहा है, जिससे इलाज के लिए आने वाले मरीजों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। सूत्रों के अनुसार कुछ लोग रोजाना सुबह से ही अस्पताल परिसर में डेरा डाल देते हैं और दिनभर अस्पताल के विभिन्न कार्यालयों व वार्डों में घूमते रहते हैं। बताया जा रहा है कि ये लोग निजी अस्पतालों से जुड़े हुए हैं और कुछ नर्सों व स्टाफ की मिलीभगत से मरीजों को बहला-फुसलाकर निजी क्लिनिकों तक पहुंचा देते हैं। जानकारी के अनुसार कस्बे में कई निजी अस्पताल संचालित हैं, वहीं एक महिला द्वारा भी अवैध रूप से क्लिनिक चलाए जाने की बात सामने आई है। इस अव्यवस्था की सूचना पर मुख्य चिकित्साधिकारी कुशीनगर ने सीएचसी कुबेरस्थान का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अस्पताल परिसर में कुछ संदिग्ध व्यक्तियों की मौजूदगी पाई गई, जिस पर सीएमओ ने नाराजगी जताई और प्रभारी चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिया कि ऐसे सभी व्यक्तियों की सूची तैयार कर जिलाधिकारी को कार्रवाई हेतु प्रेषित की जाए।

चिकित्सा प्रभारी डॉ. धीरज सिंह ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। अस्पताल के मुख्य द्वार पर स्पष्ट नोटिस चस्पा कर दिया गया है कि बिना कार्य के अस्पताल परिसर में प्रवेश वर्जित है। उन्होंने कहा कि यदि इसके बाद भी कोई अनाधिकृत व्यक्ति अस्पताल में पाया गया तो उसकी सूचना तत्काल उच्चाधिकारियों को दी जाएगी।

रेलवे द्वारा अधूरी छोड़ी गई सड़क बनी दुर्घटना का कारण

116 नंबर रेलवे फाटक से लेकर विकास चौक तक गिट्टी उखड़ी, आए दिन हो रहे हादसे

भटनी देवरिया। भटनी रेलवे के 116 नंबर रेलवे फाटक से लेकर विकास चौक तक बनाई जा रही सड़क का निर्माण कार्य अभी भी अधूरा है। अधूरे निर्माण के चलते सड़क पर जगह-जगह गिट्टियां उखड़ी हुई हैं, जिससे राहगीरों और वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इस मार्ग पर रोजाना छोटे-बड़े वाहन गुजरते हैं, लेकिन सड़क की खराब स्थिति के कारण आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं। दोपहिया वाहन चालक सबसे अधिक परेशानी झेल रहे हैं, क्योंकि फिसलन भरी सड़क पर गिरने की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। सड़क किनारे के दुकानदारों का कहना है कि गाड़ियों के तेज रफ्तार से गुजरने पर धूल उड़ती है, जिससे ग्राहक दुकान तक आने से बचते हैं। इस कारण व्यापार पर भी असर पड़ रहा है। निवासियों ने रेलवे प्रशासन से मांग की है कि सड़क निर्माण कार्य को शीघ्र पूरा कराया जाए, ताकि दुर्घटनाओं पर अंकुश लग सके और लोगों को राहत मिल सके।

अधूरी सड़क पर बिखरी गिट्टियां और उड़ती धूल — हादसे की प्रतीक्षा में खड़ी व्यवस्था।

सपाइयों ने पीड़ित परिवार को सौपी सहायता राशि

पडरौना, कुशीनगर । जिले के भिस्वा सरकारी निवासी इशहाक अंसारी की जमीनी विवाद के दौरान हुई मारपीट के दौरान हुई हत्या व मठिया निवासी सलीम अंसारी की हत्या से परिवार में उपजी आर्थिक मंदी को देखते हुए जिले के सपा नेताओं की सिफारिश पर राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने दोनों पीड़ित परिवार को 50-50 हजार की सहायता राशि भेजी है। सपा जिला कार्यालय लोहिया भवन में जिलाध्यक्ष रामअवध यादव व पूर्व राज्यमंत्री राधेश्याम सिंह ने पदाधिकारियों के साथ मृतक इशहाक की बेवा सलमा खातून व मृतक सलीम अंसारी की बेवा हसीबुन नेशा को एक सादे समारोह में उक्त धनराशि का चेक सौंपा। सपा जिलाध्यक्ष रामअवध यादव ने कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव का दिल बहुत बड़ा है। वह पोडित के प्रति शोक संवेदना जताने के साथ ही परिवार की आर्थिक मदद करने में हमेशा आगे रहते हैं। पूर्व राज्यमंत्री राधेश्याम सिंह ने कहा कि समाजवादी पार्टी आम लोगों की पार्टी है। इसमें सभी वर्गों के लोग अपनी आस्था जताते हैं। पार्टी में संवेदनाओं व भावनाओं की कद्र की जाती है। भाजपा सरकार में आये दिन हत्याएं आम बात हो गयी हैं।

पूर्व जिलाध्यक्ष मो. इलियास अंसारी ने कहा कि पार्टी की ओर से पोडित परिवार की आर्थिक मदद को राष्ट्रीय अध्यक्ष से सिफारिश की गई थी जिसे उन्होंने तुरंत स्वीकार किया और धनराशि भेज दी। इस दौरान जिला महासचिव ऐनुल हक, पूर्व विधानसभा प्रत्याशी विक्रमा यादव, राजेन्द्र यादव मुन्ना, विजेंद्र पाल यादव बब्लू, चंद्रजीत यादव, वीरेंद्र सिंह सैंथवार, पडरौना विधानसभा अध्यक्ष रामप्रताप कुशवाह, गिरिजेश यादव, पूर्व प्रमुख संघ के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. संजय गुप्ता, विजय यादव आदि मौजूद रहे।

छठ महापर्व संपन्न : उगते सूर्य को अर्घ्य के साथ पूर्ण हुआ चार दिवसीय पर्व, घाटों पर उमड़ी आस्था और विश्वास की बेजोड़ छटा

पडरौना (कुशीनगर)।

मंगलवार की सुबह उदीयमान सूर्य को अर्घ्य अर्पित करने के साथ ही लोकआस्था के महापर्व छठ का समापन हो गया। चार दिनों तक चले इस महापर्व में जिलेभर के छठ घाटों पर श्रद्धा, आस्था और विश्वास का अद्भुत संगम देखने को मिला। महिलाओं ने अपने परिवार की सुख-समृद्धि और आरोग्य की कामना करते हुए व्रत रखा। सोमवार की शाम अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य देने के बाद मंगलवार को प्रातःकाल ब्रतियों ने उगते सूर्य को अर्घ्य अर्पित किया। इसी के साथ छठी मइया की पूजा-अर्चना कर व्रत का पारायण किया गया। पडरौना नगर के प्रमुख घाटों–छावनी पोखरा घाट, राम धाम पोखरा ,अम्बे चौक, निकट हनुमान इंटर कॉलेज तालाबछठ घाट, बावली चौक घाट, और नगर के विभिन्न पोखरों पर हजारों की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। महिलाओं ने सुपली में फल-फूल, नारियल, सुप, ठेकुआ, और पूजा सामग्री लेकर जल में खड़े होकर सूर्यदेव को अर्घ्य अर्पित किया।

भक्तिमय माहौल से गूंजे घाट

छठी मइया के गीतों से पूरा वातावरण गूंज उठा। कांच ही बांस के बहंगिया... जैसे पारंपरिक गीतों की मधुर ध्वनि से घाटों का वातावरण भावनाओं से सराबोर रहा। व्रती महिलाएं पूजा के बाद परिवारजनों को आशीर्वाद देती नजर आईं।

प्रशासनिक तैयारी और सुरक्षा व्यवस्था

छठ पर्व को लेकर जिला प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद रहा। मुख्य विकास अधिकारी, पुलिस अधीक्षक, और तहसील प्रशासन की देखरेख में सुरक्षा के कड़े इंतज़ाम किए गए। गोताखोरों की तैनाती, बैरिकेडिंग, और प्रकाश व्यवस्था से लेकर साफ-सफाई तक के पुख्ता प्रबंध किए गए थे। नगर पालिका द्वारा घाटों की सजावट और स्वच्छता व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया गया।

जनपद के ग्रामीण अंचलों में भी दिखा उल्लास

केवल पडरौना ही नहीं, बल्कि तमकुहीराज, खड्डा, कप्तानगंज, हाटा, नेबुआ नौरंगिया, कसया और रामकोला क्षेत्र के विभिन्न तालाबों और नदियों के किनारे भी श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी रही। ग्रामीण इलाकों में पारंपरिक स्वरूप में पूजा संपन्न हुई, जहां महिलाओं ने लोकगीतों और भजन-कीर्तन के साथ छठी मइया की आराधना की।

समापन के साथ ही गूंजे जयकारे

अर्घ्य के बाद जब सूर्य की पहली किरण जल में पड़ी, तो श्रद्धालुओं ने जय छठी मइया और छठी मइया की जय के जयकारों से पूरा वातावरण भक्तिमय कर दिया। छठ महापर्व के सफलतापूर्वक संपन्न होने के साथ ही लोगों के चेहरों पर संतोष और प्रसन्नता झलक रही थी।

भटनी स्टेशन पर सुरक्षा रामभरोसे — जीआरपी थाना और महिला हेल्पलाइन दोनों पर नहीं दिखा कोई कर्मी

भटनी देवरिया।

भटनी रेलवे स्टेशन परिसर स्थित जीआरपी थाना में सुरक्षा व्यवस्था पूरी तरह ढीली नजर आई। न सिर्फ महिला हेल्पलाइन डेस्क खाली मिली, बल्कि पूरे जीआरपी थाना परिसर में कोई भी पुलिस कर्मी तैनात नहीं दिखा। सूत्रों के अनुसार, महिला यात्रियों की सहायता के लिए हेल्पलाइन डेस्क की व्यवस्था की गई है, ताकि किसी भी आपात स्थिति में उन्हें तुरंत मदद मिल सके।

लेकिन मौके पर न तो कोई महिला कांस्टेबल मौजूद थी और न ही कोई अन्य पुलिसकर्मी ड्यूटी पर मिला।स्थानीय यात्रियों ने बताया कि अक्सर स्टेशन पर भीड़भाड़ रहती है, ऐसे में यदि कोई घटना घट जाए तो सहायता मिलना मुश्किल होता है।

पंचायत चुनाव को बेहतर कैरियर मान रहे हैं युवा दावेदार

तमकुही राज,कुशीनगर । तमकुही, कुशीनगर। ग्राम पंचायत चुनाव को बेहतर अवसर मानते हुए तमाम युवा प्रधानी से लेकर अन्य पदों के चुनाव को अपना बेहतर कैरियर मान रहे हैं। गांव की मिनी संसद से लेकर जिले की संसद तक के चुनाव को लेकर युवाओं में बहुत उत्सुकता देखने को मिल रही है। इस चुनाव में ऐसे युवा भी सक्रिय देखने को मिल रहे हैं जो कि पहले परदेस में कहीं कमां रहे थे, लेकिन अब गांव आकर चुनाव लड़ रहे हैं। युवा प्रधानी से लेकर अन्य चीजों में अपना बेहतर कैरियर मानते हुए चुनाव में बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं। यही नहीं पंचायतों के बढ़े बजट और राजनीतिज्ञ रूप से प्रतिष्ठा मिलने की वजह से युवा इसमें अधिक रुचि दिखा रहे हैं। युवा हमेशा मतदान को लेकर जोश में रहते हैं अबकी चुनाव मैदान में कूदकर अपनी किस्मत आजमाने में भी युवा पीछे नहीं है। कोई गांव ऐसा नहीं हैं जहां प्रधान, बीडीसी या जिला पंचायत पद के चुनाव के लिए युवाओं की फौज न हो, हर जगह यह मैदान में पूरे जोश व उत्साह के साथ दिख रहे हैं। कुछ युवा जो परदेस में अच्छा कारोबार व ठेकेदारी का काम कर रहे थे। चुनाव नजदीक आया तो गांव आकर समाजसेवा में जुट गए हैं। बीडीसी के लिए भावी उम्मीदवार युवा जावेद अख्तर ने कहा कि नौकरी करके हम अपना ही भविष्य बनाते हैं मगर गांव की राजनीति से हम समाज का भला कर सकते हैं।

आप और बीजेपी से नाराज है जनता, देवेंद्र यादव ने एमसीडी के 12 वार्डों में किया कांग्रेस की जीत का दावा

नई दिल्ली । दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने 12 वार्डों में होने वाले उपचुनावों को लेकर कांग्रेस की पूरी तैयारी का ऐलान किया है. उन्होंने कहा कि जनता अब आम आदमी पार्टी और बीजेपी दोनों से निराश है और बदलाव चाहती है. कांग्रेस इस मौके को जनता की उम्मीदों पर खरा उतरने के लिए तैयार देख रही है. देवेन्द्र यादव ने चुनाव आयोग द्वारा 30 नवंबर को दिल्ली के 12 वार्डों में उपचुनाव कराने की घोषणा का स्वागत किया. उन्होंने कहा कि कांग्रेस निगम उपचुनावों के लिए पूरी तरह तैयार है और इस बार सभी वार्डों पर जीत हासिल करेगी. यादव ने दावा किया कि दिल्ली की जनता ने आम आदमी पार्टी को पहले ही नकार दिया है, जबकि बीजेपी ने पिछले आठ महीनों में लोगों की उम्मीदों को तोड़ने का काम किया है.

12 पर्यवेक्षक करेंगे उम्मीदवारों का चयन, बूथ स्तर पर तैयारी तेज

कांग्रेस अध्यक्ष ने बताया कि पार्टी ने हर विधानसभा क्षेत्र में जीतने वाले उम्मीदवारों के चयन के लिए 12 पर्यवेक्षक नियुक्त किए हैं. ये पर्यवेक्षक लोकसभा, जिला और विधानसभा स्तर के नेताओं के साथ समन्वय बनाकर स्थानीय कार्यकर्ताओं से क्षेत्र की समस्याओं और जनता की जरूरतों पर चर्चा करेंगे. यादव ने कहा कि कांग्रेस ने पिछले कुछ महीनों से बूथ स्तर पर संगठन को मजबूत करने की दिशा में व्यापक काम किया है. नए ब्लॉक, जिला अध्यक्षों और पदाधिकारियों की नियुक्ति के बाद कार्यकर्ता अब हर बूथ पर लोगों से सीधा संवाद कर रहे हैं.

'आप' पर हमला, बीजेपी को भी घेरा — कांग्रेस का पलटवार

देवेन्द्र यादव ने आम आदमी पार्टी पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि 11 साल के शासन में 'आप' ने दिल्ली को बर्बादी के कगार पर पहुंचा दिया है. वहीं बीजेपी, सत्ता में आने के बाद भी शहर को सुधारने में नाकाम रही है. उन्होंने कहा कि दिल्ली में फैली गंदगी, बढ़ता वायु प्रदूषण, जहरीली यमुना, बिगड़ी परिवहन व्यवस्था और चरमराई स्वास्थ्य एवं शिक्षा प्रणाली से लोग परेशान हैं. यादव ने चांदनी चौक में सीलिंग के मुद्दे को भी बीजेपी के खिलाफ एक बड़ा चुनावी विषय बताया.

पारदर्शी चुनाव हुए तो कांग्रेस की 12 में 12 सीटों पर जीत तय

देवेन्द्र यादव ने भरोसा जताया कि अगर उपचुनाव निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से कराए गए, तो कांग्रेस सभी 12 वार्डों - उपचुनाव मुंडका, शालीमार बाग-बी, अशोक विहार, चांदनी चौक, चांदनी महल, द्वारका-बी, दिचाऊं कलां, नारायणा, संगम विहार-ए, दक्षिण पुरी, ग्रेटर कैलाश और विनोद नगर में जीत हासिल करेगी.

30 नवंबर को मतदान, 3 दिसम्बर को आएंगे नतीजे

बता दें कि, दिल्ली नगर निगम की 12 सीटों पर उपचुनाव होने हैं, जिसके लिए राज्य निर्वाचन आयोग ने नोटिफिकेशन जारी कर दी है. इसके मुताबिक तीन नवंबर से नामांकन की प्रक्रिया शुरू होगी जिसकी अंतिम तारीख 10 नवंबर तय की गई है.

मेड इन बिहार बनाना है मेरा सपना- राहुल

पीएम करते हैं सिर्फ दिखावा- राहुल गांधी

■ बिहार में राहुल बोले-वोट के लिए नाच सकते हैं मोदी, कहा- ट्रंप से डरकर ऑपरेशन सिंदूर रोका; चैलेंज है, प्रधानमंत्री कह दें ये झूठ है

मुजफ्फरपुर । बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के प्रचार अभियान के दौरान कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने मुजफ्फरपुर के सकरा विधानसभा क्षेत्र में एक विशाल जनसभा को संबोधित किया। इस मौके पर राजद नेता तेजस्वी यादव और वीआईपी सुप्रीमो मुकेश सहनी भी मंच पर मौजूद रहे। राहुल गांधी ने बारिश के बीच जुटी भीड़ का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अब बदलाव का समय आ गया है। उन्होंने कहा, मैं देश के हर कोने में जाता हूं, वहां बिहार के युवा काम करते नजर आते हैं। अब समय आ गया है कि बिहार के लोग अपने ही प्रदेश में रोजगार पाएं और बिहार को आत्मनिर्भर बनाएं। राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तीखा हमला बोलते हुए कहा, पीएम मोदी को सिर्फ वोट लेने से मतलब है, गरीबों की तकलीफ से नहीं। वे दिखावे की राजनीति करते हैं। उन्होंने छोटे उद्योगों को खत्म कर अदानी-अंबानी को फायदा पहुंचाया है। उन्होंने कहा, हमारा सपना है कि अब मेड इन चाइना नहीं, बल्कि मेड इन बिहार लिखा जाए। मोबाइल, शर्ट, पैंट सब बिहार में बने। बिहार के युवाओं को अपने ही राज्य की फैक्टरियों में रोजगार मिले। राहुल गांधी ने कहा, बिहार में बिहारियों का भविष्य नहीं है, यही सच्चाई है। आज हर युवा यही कहता है। पिछले 20 वर्षों में इन लोगों ने कुछ नहीं किया। मोदी सरकार ने रोजगार के नाम पर सिर्फ अदानी-अंबानी के लिए काम किया है। यही वजह है कि अब दूसरे प्रदेशों के लोग बिहार आने से कतराते हैं। उन्होंने कहा, हम सबका सपना है कि बिहार के युवाओं के हाथों में मेड इन बिहार लिखा हो, ताकि रोजगार यहीं पैदा हो।

सीएम का रिमोट बीजेपी के पास

राहुल गांधी ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर भी निशाना साधते हुए कहा, नीतीश कुमार बीजेपी के इशारे पर चलते हैं। मुख्यमंत्री का रिमोट कंट्रोल बीजेपी के पास है। उन्होंने कहा कि महागठबंधन के नेता तेजस्वी यादव और कांग्रेस एकजुट हैं और बिहार को बदलने के लिए काम कर रहे हैं। राहुल ने आगे कहा, हमने वोट चोरी के खिलाफ लंबी यात्रा की, 20 जिलों में घूमे, गांव-गांव पहुंचे। अब बिहार सबसे आगे जा सकता है और जरूर जाएगा। लेकिन बीजेपी और एनडीए को सामाजिक न्याय से कोई लेना-देना नहीं है। मैंने सदन में पीएम मोदी से कहा था कि जाति गणना कराएं, लेकिन उन्होंने जवाब नहीं दिया। बीजेपी सामाजिक न्याय के खिलाफ है। राहुल गांधी ने कहा कि बिहार में शिक्षा की हालत बेहद खराब है। यहां मेहनती युवाओं की कद्र नहीं है। वे कर्ज लेकर लाखों रुपए खर्च करते हैं, फिर भी रोजगार नहीं पाते। एग्जाम के पेपर लीक हो जाते हैं, जिससे मेहनत बेकार चली जाती है। उन्होंने कहा, आज भी मैं दिल्ली में एम्स के फ्लाईओवर के नीचे बिहारी युवाओं को देखता हूं जो अपनी तकलीफें बताते हैं। बिहार को बदलने के लिए आया हूं और बदलकर रहूंगा। राहुल ने कहा कि पीएम मोदी सिर्फ आपका वोट चाहते हैं, आपकी परेशानियों से उन्हें कोई मतलब नहीं है। उन्होंने जनता से अपील की कि बिहार के युवाओं के भविष्य के लिए इस बार बदलाव लाना जरूरी है।

वायनाड पहुंची प्रियंका, बोलीं- केरल में एसआईआर का करेंगी विरोध

तिरुवनंतपुरम । कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने बुधवार को साफ किया कि पार्टी केरल में मतदाता सूची की स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन प्रक्रिया का कड़ा विरोध करेगी। उन्होंने कहा कि जिस तरह बिहार में इस प्रक्रिया के नाम पर धांधली हुई, वैसा ही खेल अब दूसरे राज्यों में भी खेला जा रहा है, और कांग्रेस इसे किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं करेगी। वायनाड की सांसद प्रियंका गांधी ने चुनाव आयोग के इस कदम पर सवाल उठाते हुए कहा कि आयोग कई राज्यों में मतदाता सूची की स्पेशल रिवीजन करने की तैयारी में है, जिसमें केरल भी शामिल है। उन्होंने कहा कि हमने बिहार में भी इस प्रक्रिया का विरोध किया था, संसद के भीतर और बाहर दोनों जगह, और आगे भी हर जगह इसका विरोध जारी रहेगा। प्रियंका ने इस प्रक्रिया को धोखाधड़ी और चुनावी जालसाजी का तरीका बताते हुए कहा कि यह लोकतंत्र के खिलाफ साजिश है। कांग्रेस नेता ने कहा कि बिहार में जिस तरह से मतदाता सूची की समीक्षा की गई, उससे साफ है कि इसका मकसद लोगों के वोटिंग अधिकारों को सीमित करना है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर यही तरीका देशभर में अपनाया गया, तो यह लोकतंत्र पर हमला होगा। हमने देखा है कि बिहार में क्या हुआ, और अगर वही बाकी राज्यों में दोहराया गया तो यह लोकतंत्र का अपमान होगा। प्रियंका गांधी इन दिनों वायनाड के दो दिवसीय दौरे पर हैं, जहां वह अपने संसदीय क्षेत्र में कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन कर रही हैं। वह बुधवार सुबह कालीकट एयरपोर्ट पहुंचीं और सड़क मार्ग से वायनाड गईं। इस दौरान उन्होंने मलप्पुरम जिले के एरनाड में राजीव गांधी मेमोरियल गवर्नमेंट आयुर्वेद डिस्पेंसरी की नई इमारत का उद्घाटन भी किया। पार्टी सूत्रों के अनुसार, वह अपने दौरे में स्थानीय लोगों से मिलकर विकास कार्यों की समीक्षा भी करेंगी। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने भी इस मुद्दे पर प्रियंका के रुख का समर्थन किया है। उन्होंने कहा कि दो नवंबर को होने वाली ऑल पार्टी मीट लोकतंत्र को रक्षा के लिए बुलाई गई है। स्टालिन ने आरोप लगाया कि भाजपा इस प्रक्रिया के जरिये तमिलनाडु के लोगों के वोटिंग अधिकार छीनने की कोशिश कर रही है। उन्होंने कहा कि वोट देना लोकतंत्र की बुनियाद है। हम किसी भी कीमत पर इसे बलिदान नहीं करेंगे। स्टालिन ने सभी राजनीतिक दलों से अपील की कि वे मतभेद भुलाकर इस बैठक में शामिल हों और लोकतंत्र की रक्षा के लिए एकजुट हों।

लालू बेटे को मुख्यमंत्री, सोनिया बेटे को प्रधानमंत्री बनाना चाहती हैं, दोनों पद रिक्त नहीं : अमित शाह

दरभंगा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को महागठबंधन को 'ठगबंधन करार दिया और कहा कि लालू प्रसाद अपने बेटे तेजस्वी यादव को बिहार का मुख्यमंत्री और सोनिया गांधी अपने बेटे राहुल गांधी को प्रधानमंत्री बनाना चाहती हैं, लेकिन ये दोनों पद रिक्त नहीं हैं। उन्होंने दरभंगा में एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए जनता का आह्वान किया कि पिछले विधानसभा चुनाव में दरभंगा की 10 में से 9 सीटें राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के खाते में गई थीं और इस बार वे सभी 10 सीटें राजग को दिलाएं। दरभंगा जिले के अलीनगर विधानसभा क्षेत्र में आयोजित सभा में शाह ने महागठबंधन को 'ठगबंधन करार दिया और दावा किया कि लोकप्रिय कलाकार मैथिली ठाकुर भी चुनाव जीतेंगी। मैथिली अलीनगर से भाजपा की उम्मीदवार हैं। शाह ने कहा, मैथिली भाषा को आधिकारिक भाषा का दर्जा राजग सरकार ने ही दिया। संविधान को भी मैथिली में उपलब्ध कराया गया है।

मिथिला के पुनौराधाम में माता सीता का भव्य मंदिर निर्माणधीन है। जहां-जहां माता सीता गईं, उन सभी स्थानों को रेल सर्किट से जोड़ा जाएगा। उन्होंने अनुच्छेद 370 के मुद्दे पर कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) पर निशाना साधते हुए कहा कि कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा है। मोदी जी ने अनुच्छेद 370 हटाया लेकिन कांग्रेस और राजद ने इसका विरोध किया। गृह मंत्री ने कहा, ''आतंकवादियों को पाकिस्तान के ठिकानों में मार गिराया गया और पीएफआई (पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया) पर प्रतिबंध लगाया गया, लेकिन क्या राजद की सरकार आएगी तो क्या वह पीएफआई के लोगों को जेल में रहने देगी? राजग किसी भी कीमत पर उन्हें बाहर नहीं आने देगा। शाह का कहना था कि जल्द ही दरभंगा में मेट्रो रेल संचालित होगी और राजग सरकार ने यहां एयरपोर्ट बनवाया है तथा बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के लिए एम्स का निर्माण जारी है। उन्होंने कहा कि बिहार में 8.52 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन दिया जा रहा है, मखाना बोर्ड का गठन किया गया, घरेलू उपभोक्ताओं को 125 यूनिट मुफ्त बिजली और सामाजिक सुरक्षा पेंशन में वृद्धि की गई है। राजग प्रत्याशियों में युवाओं को तरजीह देने का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा, मोदी जी युवाओं को आगे बढ़ाते हैं, लेकिन राजद और कांग्रेस में ऐसा संभव नहीं। लालू जी अपने बेटे को मुख्यमंत्री बनाना चाहते हैं और सोनिया जी अपने बेटे को प्रधानमंत्री। मैं दोनों से कहना चाहता हूं कि प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के पद खाली नहीं हैं। शाह ने राजद प्रमुख लालू प्रसाद पर 'चारा घोटाला और 'भूमि-के-बदले-नौकरी घोटाले में शामिल रहने के आरोप दोहराए तथा साथ ही, कांग्रेस पर 12 लाख करोड़ रुपये के भ्रष्टाचार मामलों में लिप्त होने का आरोप लगाया। उन्होंने घोषणा की कि मिथिला में 500 करोड़ रुपये की लागत से एक केंद्र स्थापित किया जाएगा, जहां देशभर के सभी पांडुलिपियों का संरक्षण किया जाएगा।

शहाबुद्दीन के परिवार को टिकट देकर आरजेडी ने दिया अपराधियों को बढ़ावा- मुख्यमंत्री योगी

सीवान ।

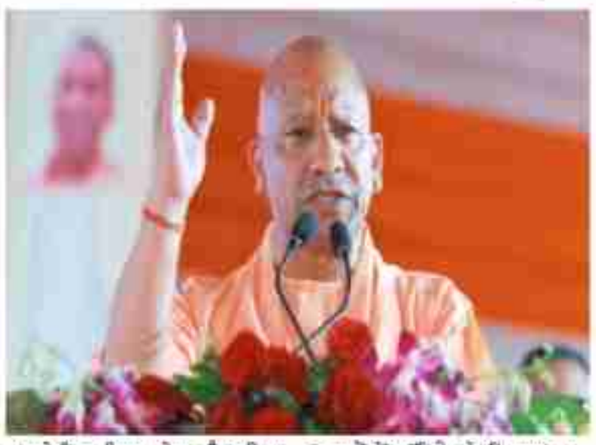

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को कहा कि बिहार में डबल इंजन की सरकार अराजकता फैलाने वालों को कतई बर्दाश्त नहीं करने की नीति पर काम कर रही है और राजग में शामिल दल राज्य में 'जंगल राज' की वापसी के किसी भी प्रयास को नाकाम कर देंगे। भाजपा नेता आदित्यनाथ ने लोगों से सर्वांगीण विकास के लिए राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को वोट देने की अपील करते हुए कहा कि बिहार के लोगों को राजद और कांग्रेस जैसी उन ताकतों की जरूरत नहीं है जो अपराधियों को गले लगाती हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को सीवान जिले की रघुनाथपुर विधानसभा सीट से मोहम्मद शहाबुद्दीन के बेटे ओसामा शहाब को मैदान में उतारने पर महागठबंधन की आलोचना की। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में अपराध और अपराधियों के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति है, जबकि आरजेडी ने एक ऐसे उम्मीदवार को मैदान में उतारा है जिसका परिवार आपराधिक पृष्ठभूमि का है। सीवान में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, इस सीट से आरजेडी उम्मीदवार देश और दुनिया भर में अपने परिवार की आपराधिक पृष्ठभूमि के लिए जाना जाता है... उत्तर प्रदेश में अपराध और अपराधियों के प्रति जीरो टॉलरेंस है। उत्तर प्रदेश के सीएम ने बिहार में राम मंदिर रथ यात्रा रोकने के लिए भी आरजेडी की आलोचना की। उन्होंने कहा कि आरजेडी सीतामढ़ी में सीता मंदिर के निर्माण के भी खिलाफ है। उन्होंने कहा, आज आप देख रहे होंगे कि राजद और उसके सदस्य अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि पर भगवान राम के मंदिर का विरोध कर रहे हैं। उन्होंने रथ यात्रा का विरोध किया। वे माँ जानकी के भव्य मंदिर के निर्माण और सीतामढ़ी व आसपास के इलाकों में कॉरिडोर के विकास का भी विरोध कर रहे हैं। सीएम योगी ने कहा कि 2005 से पहले बिहार में केवल अपराधी ही फलते-फूलते थे और महागठबंधन के सहयोगी उस दौर को वापस लाना चाहते हैं। उन्होंने कहा, 2005 से पहले नारा सबका साथ, लेकिन परिवार का विकास का होता था... अब वे बिहार में माफिया राज बढ़ाना चाहते हैं... केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने घोषणा की है कि मार्च 2026 तक भारत नक्सलवाद से मुक्त हो जाएगा... हम समाज के सभी वर्गों का विकास करना चाहते हैं। इसके अलावा रघुनाथपुर में चुनावी रैली को संबोधित करते हुए आदित्यनाथ ने कहा, बिहार में 'माफिया राज' को फिर से जिंदा करने के लिए ताकतें सक्रिय हैं, लेकिन उन्हें शुरुआत में ही खत्म कर दें। राजग में शामिल सभी दलों ने बिहार में 'जंगल राज' की वापसी को रोकने का फैसला किया है। बिहार में 'डबल इंजन' की सरकार अराजकता फैलाने वालों को कतई बर्दाश्त नहीं करने की नीति पर चलती है... सरकार उसी दिशा में काम कर रही है। बाकी के लिए बुलडोजर मौजूद है। उन्होंने कहा, अपराधियों को गले लगाने वालीं राजद, कांग्रेस को बिहार को सत्ता में न आने दें। आदित्यनाथ ने आरोप लगाते हुए कहा, कांग्रेस और राजद जैसी ताकतें औरंगजेब की कब्र पर 'सजदा' करने की आदी हैं... अपराधियों को गले लगाने वालीं ऐसी ताकतों को सत्ता में न आने दें। आदित्यनाथ ने दावा किया कि राजद बिहार में देवी सीता के मंदिर के निर्माण का विरोध कर रही है। उन्होंने कहा कि 6,100 करोड़ रुपये की लागत से उत्तर प्रदेश के अयोध्या धाम को बिहार के सीतामढ़ी से जोड़ने का कार्य जारी है। उन्होंने कहा, बिहार की महिलाएं डबल इंजन की सरकार की मदद से सशक्त हो रही हैं, और यही सरकार विकास व महिलाओं की सुरक्षा की गारंटी दे सकती है।

नवनीत राणा को मिली गैंगरेप और जान से मारने की धमकी: पीएम मोदी का भी जिक्र, एफआईआर दर्ज

महाराष्ट्र । महाराष्ट्र की बीजेपी नेता और पूर्व सांसद नवनीत राणा को एक बार फिर जान से मारने की धमकी मिली है। इस बार धमकी में उनके साथ गैंगरेप करने की भी बात कही गई है। यह धमकी स्पीड पोस्ट के जरिए उनके कार्यालय तक पहुंचाई गई। मिली जानकारी के अनुसार, पत्र हैदराबाद से जावेद नाम के व्यक्ति द्वारा भेजा गया है। पुलिस ने शिकायत पर एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है, जबकि राजनीतिक हलकों में इस घटना ने सनसनी फैला दी है। धमकी भरे पत्र में बेहद अश्लील और आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। इसमें लिखा गया है कि आरोपी नवनीत राणा के बच्चे के सामने ही उनका बलात्कार करेगा। साथ ही, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जिक्र करते हुए कहा गया है, तुम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पत्नी हो। पत्र में गंभीर परिणाम भुगतने की चेतावनी भी दी गई है। इस घटना ने सवाल खड़े कर दिए हैं कि जब सांसद और नेता ही सुरक्षित नहीं, तो आम जनता किस पर भरोसा करे। सूत्रों के अनुसार, यह पत्र हैदराबाद से जावेद नामक व्यक्ति ने भेजा है। जैसे ही पत्र प्राप्त हुआ, नवनीत राणा के निजी सहायक मंगेश कोकाटे ने तुरंत अमरावती के राजापेठ पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराई।

नागपुर में सड़कों पर उतरे किसान, कर्ज माफी को लेकर बंद किया खाइवे; अब ट्रेनें रोकने पहुंचे

मुंबई । महाराष्ट्र में कर्जमाफी की मांग को लेकर जारी नागपुर में किसानों का आंदोलन दूसरे दिन भी जारी है। प्रदर्शनकारी किसान पूर्व मंत्री और प्रहार पार्टी के नेता बच्चू कडू के नेतृत्व में आंदोलन कर रहे हैं। आंदोलनकारियों ने राष्ट्रीय राजमार्ग 44 को बंद किया हुआ है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग नागपुर को हैदराबाद से जोड़ता है।

आज प्रदर्शनकारी किसानों ने ट्रेनें रोकने की धमकी दी है और रेल रोकने के लिए रेलवे ट्रैक पर पहुंच भी गए हैं। प्रहार पार्टी के नेता बच्चू कडू ने राय सरकार पर निशाना साधा और किसानों की कर्ज माफी करने की मांग की। बच्चू कडू ने कहा कि आज हम 12 बजे के बाद ट्रेनें रोकेंगे। हमारे किसान कर्ज में डूब रहे हैं। अगर राय सरकार के पास किसानों का कर्ज माफ करने के लिए पैसे नहीं हैं तो केंद्र सरकार को इसमें मदद करनी चाहिए। मंगलवार को हजारों की संख्या में किसानों ने राष्ट्रीय राजमार्ग-44 को बंद कर दिया। किसानों का आरोप है कि बार-बार वादा करने के बावजूद सरकार किसानों की कर्जमाफी नहीं कर रही है। साथ ही सूखे की समस्या से जूझ रहे किसानों को भी सरकार ने पर्याप्त मदद नहीं की है। प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे पूर्व मंत्री बच्चू कडू ने कहा कि किसानों का कर्ज माफ करने की मांग थी। उन्होंने कहा कि सोयाबीन की फसल के छह हजार रुपये दिए जाएंगे और हर फसल पर 20 प्रतिशत बोनस दिया जाएगा। मध्य प्रदेश में इस समय भावांतर योजना चल रही है, लेकिन यहां ऐसी कोई योजना नहीं है। महाराष्ट्र में एक भी फसल को पूरा दाम नहीं मिल रहा है और मुख्यमंत्री के पास किसानों से मिलने का समय ही नहीं है। कर्जमाफी की मांग भी है। अभी एक से डेढ़ लाख किसान प्रदर्शन कर रहे हैं और एक लाख और आ रहे हैं।

21 नक्सलियों का लाल आतंक से फिर हुआ मोहभंग, 18 हथियारों के साथ माओवादियों ने किया सरेंडर

कांकेर ।

उत्तर बस्तर में सक्रिय रहे 21 माओवादियों ने 18 हथियारों के साथ पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। जंगलवार कॉलेज में सभी नक्सलियों का रेड कारपेट बिछाकर स्वागत किया गया। आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों को बस्तर आईजी ने संविधान की प्रति सौंपी। नक्सलवाद के खात्मे को लेकर जारी अभियान के बीच इस माह पुलिस ने अपनी रणनीति बदली है और एनकाउंटर की जगह समर्पण को प्राथमिकता देते हुए नक्सलियों को साफ संदेश दिया गया था कि जो यदि आत्मसमर्पण कर मुख्य धारा में लौटने को तैयार हैं तो उनका स्वागत किया जाएगा। ऐसा नहीं करने पर सुरक्षाबलों की गोली का निशाना बनना पड़ेगा। जिसका असर भी देखने को मिला और इसी माह 208 नक्सलियों ने 109 हथियारों के साथ जगदलपुर में सरेंडर किया, जिसके बाद कांकेर जिले के दो एरिया कमेटी ने आज एक साथ हथियार छोड़े हैं, जिसमें 21 नक्सलियों ने 18 हथियार पुलिस को सौंपे है। बस्तर आईजी पी सुंदरराज ने कहा कि एक समय था जब नक्सलियों के पोलित ब्यूरो और सेंट्रल कमेटी में 45 सदस्य हुआ करते थे लेकिन 2025 की शुरुआत में इनकी संख्या घटकर 18 रह गई थी। 2025 का अंत आते आते महज 6 से 7 सेंट्रल कमेटी और पोलित ब्यूरो मेंबर शेष बचे है जो दक्षिण बस्तर के जंगलों में छिपे हुए है। आईजी ने कहा कि दक्षिण बस्तर में छिपे नक्सलियों से अपील भी कर रहे है और उन्हें चेतावनी भी दे रहे है कि अब भी समय है वो सरेंडर कर दे अन्यथा बस्तर के तैनात डीआरजी समेत तमाम सुरक्षाबलों के जवान उनसे निपटने के लिए तैयार बैठे हैं।

चेन्नई में दरिंदगी! 22 साल की युवती से बाइक टैक्सी ड्राइवर ने रेप कर घर छोड़ा, आरोपी गिरफ्तार

चेन्नई । चेन्नई में एक बाइक टैक्सी चालक को बुधवार को 22 वर्षीय महिला के साथ बलात्कार के आरोप में गिरफ्तार किया गया, जिसने पिछली रात उसकी सेवा बुक की थी। शिवकुमार नामक आरोपी को अदालत में पेश किया गया और न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। पुलिस ने अपराध में प्रयुक्त मोटरसाइकिल भी जब्त कर ली है। जांचकर्ताओं के अनुसार, महिला ने सोमवार देर रात एक दोस्त से मिलने पल्लीकरनई जाने के लिए बाइक टैक्सी बुक की थी। उसने ड्राइवर शिवकुमार से रुकने को कहा ताकि वह उसके आने के बाद उसे घर छोड़ सके। पुलिस ने बताया कि मंगलवार तड़के वापसी यात्रा के दौरान, शिवकुमार ने कथित तौर पर एक सुनसान रास्ता लिया, महिला को धमकाया और उसके साथ बलात्कार किया। हमले के बाद, आरोपी ने महिला को उसके घर वापस छोड़ दिया। उसने अपने पति को घटना के बारे में बताया। महिला की शिकायत के आधार पर, पुलिस ने जाँच के बाद आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के बयान में कहा गया है, टी 5 वनागरम पुलिस ने शिकायत की जाँच की और उसे सही पाया। मामला दर्ज कर लिया गया है और आरोपी की पहचान शिवकुमार के रूप में हुई है। तमिलनाडु में विशेष महिलाओं के खिलाफ बढ़ते यौन अपराधों पर चिंता व्यक्त करता रहा है। हालाँकि, राज्य पुलिस और सत्तारूढ़ द्रमुक आरोपों से इनकार करते हैं और दावा करते हैं कि कड़ी कार्रवाई की जा रही है और हाल के मामलों में त्वरित न्याय के लिए मुकदमों की सुनवाई तेज़ की जा रही है।

आसाराम को राजस्थान हाईकोर्ट से मिली अंतरिम जमानत, 6 महीने के लिए चिकित्सा आधार पर रिहा

राजस्थान। बलात्कार के दोषी स्वयंभू धर्मगुरु आसाराम को बुधवार को राजस्थान उच्च न्यायालय ने चिकित्सा आधार पर छह महीने की अंतरिम जमानत दे दी। आसाराम ने चिकित्सा उपचार का हवाला देते हुए जमानत मांगी थी। आसाराम बलात्कार के एक मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहा है और जोधपुर सेंट्रल जेल में बंद है। यौन उत्पीड़न के एक मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहे आसाराम ने चिकित्सा उपचार के लिए उच्च न्यायालय में नियमित जमानत याचिका दायर की थी। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश संजीव प्रकाश शर्मा की खंडपीठ के समक्ष मामले की सुनवाई हुई। वर्तमान में, आसाराम का एक निजी अस्पताल में इलाज चल रहा है। नियमित जमानत के लिए अधिवेदन उनकी वर्तमान स्वास्थ्य स्थिति का हवाला देते हुए किया गया था। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश संजीव प्रकाश शर्मा की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने याचिका को समीक्षा की। न्यायालय ने आसाराम के वकील द्वारा प्रस्तुत चिकित्सा रिकॉर्ड की जाँच की, जिसमें उनके बिगड़ते स्वास्थ्य और जेल सुविधाओं में उपलब्ध नहीं होने वाले विशेष उपचार की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। अधिकारियों ने पुष्टि की कि आसाराम वर्तमान में एक निजी अस्पताल में भर्ती हैं, जहाँ उन्हें निगरानी में चिकित्सा देखभाल मिल रही है। पीठ ने छह महीने की राहत दी। चिकित्सा दस्तावेजों और दोषी की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करने के बाद, राजस्थान उच्च न्यायालय ने छह महीने की अंतरिम जमानत देने का फैसला किया। इस आदेश में आसाराम को इलाज और स्वास्थ्य लाभ के लिए अस्थायी रिहाई की अनुमति दी गई है, साथ ही अदालत ने इस बात पर ज़ोर दिया कि यह राहत पूरी तरह से चिकित्सा आधार पर है।